समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

Postal R.No. UA/DO/16/2015-2017, RNI-NO.38653/80

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

16 नवम्बर 2016

वर्ष-29, अंक-10

प्रकाशन स्थल : शांतिकुंज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : 12 नवम्बर 2016

संस्थापक-संरक्षक : युगऋषि पं.श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

E-mail: news.shantikunj@gmail.com, news@awgp.in

वार्षिक चंदा ₹ 40/- विदेश में ₹ 500/- प्रति अंक ₹ 2/-

युगतीर्थ शांतिकुंज में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया प्रकाश पर्व, पंचपर्वों के माध्यम से प्रवाहित होती रही जीवन-आदर्शों की प्रेरणाएँ, हजारों आश्रमवासी-शिविरार्थियों ने देश के सैनिकों के सम्मान में दीप जलाये

लोकसम्मान त्याग, परमार्थ, आदर्शवादिता का ही हो

धन का सम्मान एक विडंबना ही है

स्मरण रखा जाना चाहिए कि सम्मान एक प्रकार का प्रोत्साहन है और यश लोगों को उस दिशा में प्रयत्नशील होने के लिये उत्तेजित करता है, जिसमें कि यश मिलता है। प्रत्येक व्यक्ति के मन में यह ललक छिपी रहती है कि उसे सम्मान मिले, यश प्राप्त हो, लोग उसे सराहें तथा आदर की दृष्टि से देखें। जब किसी को सम्मान मिलता है तो लोग देखते हैं कि यह आदर किसलिए दिया जा रहा है। उनमें भी वही कुछ करने और वैसा बनने की उमंग उठती है, जो सम्मान और प्रतिष्ठा का मापदण्ड बना हुआ है।

आज धनवानों को सम्मानित होते देखकर हर किसी में धनवान बनने की होड़ मची हुई है। धनवान होना सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त करने का माध्यम बन गया गया है। किसने कैसे कमाया? इसका कहीं विश्लेषण नहीं किया जाता। देखा यह जाता है कि कौन कितना सम्पन्न है? किसके पास विलासिता और ऐश्वर्य के कितने साधन उपलब्ध हैं? इस कसौटी पर जो धन सम्पन्न दिखाई देता है, लोग उसी का आदर करने लगते हैं तथा उसी का दबदबा मानने लगते हैं।

सम्पन्नता के लिये प्रयत्न करना अनुचित नहीं हैं। सम्पन्नता को सम्मान मिलना भी बुरी बात नहीं है। यह सम्मान इस बात का द्योतक है कि व्यक्ति परिश्रमी, उद्यमी, पुरुषार्थी और साहसी है। लोग उसके इन गुणों का आदर करें यह उचित हैं, परन्तु जब केवल सम्पन्नता को ही सम्मान का एकमात्र आधार मान लिया जाता है तो अनर्थ वहीं से होने लगता है।

वैसे सम्पन्न व्यक्ति को प्रतिष्ठा अर्जित करने, सम्मान और यश प्राप्त करने का कोई विशेष अधिकार नहीं हैं। सम्पन्न व्यक्ति अपने पुरुषार्थ से धन कमायें और उससे मौज उड़ायें, इसी से उनके पुरुषार्थ का पुरस्कार मिल जाता है, जो पर्याप्त है। उन्हें थोड़ा-बहुत आदर दिया जा सकता है, किन्तु सम्पन्नता की चकाचौंध से चकित होकर जो व्यक्ति ऐसे लोगों को किसी बहाने विशेष सम्मान या यश देने का प्रयत्न करते हैं, वे देवग्रास को देवताओं से छीनकर कौरवों को देने जैसी विडम्बना रचते हैं।

मध्यकाल की विकृत परम्परा

यश, सम्मान के आकांक्षी लोगों द्वारा धन को प्रतिष्ठा मिलती देखकर नैतिक मूल्यों को भी ताक पर रखा जाने लगा है। मध्यकाल में भी कुछ ऐसा ही हुआ। उन दिनों विजेता, सामन्त, जागीरदार यश और सम्मान के पात्र समझे जाते थे। आदर्श के लिये युद्ध करना और उसमें विजय प्राप्त करना अभिनन्दनीय हो सकता है, किन्तु धन और यश की चाह में दूसरे पड़ौसी को निर्बल पाकर उसकी सम्पदा लूटने तथा युवा लड़कियों को, कुल-वधुओं को अपहृत कर ले जाने, प्रजा को रौंद डालने, स्वस्थ नर-नारियों को पकड़ कर ले जाने तथा गुलाम बनाकर रखने की प्रवृत्ति भी अपनायी गयी, जो हर दृष्टि से गर्हित ही है। किन्तु ऐसा करने वालों ने अपनी यशगाथायें लिखाईं और इसके लिये भाटों, खुशामदियों को आजीविका दी। प्रशंसकों को पैसे के बल पर खरीदा। परिणामस्वरूप मध्यकाल का अन्धकार युग आया जिसमें भारतीय समाज हर दृष्टि से दीन-दुर्बल बना। कई कुरीतियाँ पैदा हुईं और लोगों के नैतिक एवं चारित्रिक स्तर में गिरावट आई।

ज्ञान की गरिमा आदर्शों के वरण में ही है

बुद्धि का कमाल विचार-परामर्श करने में, व्यावसायिक क्षेत्र में, छिद्रान्वेषण में देखने ही योग्य होता है। जहाँ तात्कालिक लाभ दीखता है वहाँ उसकी पकड़ खूब काम करती है। मर्यादाओं और वर्जनाओं को तोड़ने, पापों पर पर्दा डालने में उसका दुस्साहस देखते ही बनता है। बुद्धि की इस विलक्षण क्षमता का लाभ लेकर बुद्धिमानों को सराहना व सम्मान पाते, सम्पदा-सफलता अर्जित करते देखा जाता है।

इतना होते हुए आदर्शों की राह पर चलने में बुद्धि आना-कानी करती है। देर तक प्रतीक्षा करना उसे सहन नहीं। बालबुद्धि की तरह तात्कलिक आकर्षण एवं लाभ उसे चाहिए। इतना विवेक भी नहीं होता कि दूरगामी परिणामों को सोच सके। अभ्यास और साहस के अभाव में समुद्र की गहराई में उतर कर बहुमूल्य मणि-मुक्तक ढूँढ़ लाने की क्षमता अर्जित करने की न उसकी इच्छा होती है और न चेष्टा। फलस्वरूप तथाकथित बुद्धिमान भी बहुश्रुत, बहुपठित होकर रह जाते हैं। वे ऐसा कुछ नहीं कर पाते, जिसे अनुकरणीय एवं अभिनंदनीय कहा जा सके।

ज्ञान कितना ही महत्त्वपूर्ण क्यों न हो, पर यदि वह बातचीत अथवा जानकारी तक ही सीमित रह जाय तो समझना चाहिए कि ऐसा ही दुर्भाग्य आ अड़ा मानो थाली में भोजन परोसा गया हो पर उसे पेट में पहुँचाने के लिए प्रयत्न नहीं हुआ।

मौखिक रूप से वक्तृत्व का अभ्यास कर लेने वाले बड़ी-बड़ी ऊँची बातें कहते और धुँआधार प्रवचन करते देखे गये हैं। पर जब उस कथनी को अपनी निज की करनी में उतारने का प्रसंग आता है, तो अपना रुख ही बदल लेते है।

वक्तृत्व एक कला है, पर आदर्शों को जीवन में उतारना तो लोहे के चने चबाना जैसा है। अपने को गलाना और ढालना धातु के उपकरण बनाने से कठिन है। उस कठिनाई को जो कोई पार कर सके, उसी को सच्चा शूरवीर कहना चाहिए। उन्हें तो पुस्तकों के भार से लदा हुआ गधा ही कहना चाहिए, जिनके मस्तिष्क पर ज्ञान का बोझ तो बहुत लदा है, पर वे स्वयं उससे कुछ लाभ नहीं उठा पाते। (वाङ्मय 64/5.50 से संकलित, सम्पादित)

सम्मान के सच्चे हकदार

सम्मान एक प्रकार का आदर्शों का मूल्यांकन है। यह उसके लिए उपहार है जिसने बिना कोई प्रत्यक्ष लाभ उठाये वह काम किया जिसके लिये वह साम्मनित हुआ। प्राचीनकाल के स्वर्ण युग में सम्मान न तो विजेता, सामन्तों या सम्राटों को दिया जाता था और न ही धनिकों को। मनीषियों ने उन दिनों यह परम्परा निर्धारित की थी कि अभिनन्दन और अभिवन्दन केवल साधु-ब्राह्मणों का ही किया जाये। साधु अर्थात् पारमार्थिक प्रयोजनों के लिये पूर्णतया समर्पित लोकसेवी और ब्राह्मण अर्थात् चरित्रवान मानवी आदर्श का प्रतिनिधि।

शासक के पास सत्ता है, पद है, भय और लोभ से दूसरों को प्रभावित करने की सामर्थ्य है। उसके लिये बस इतना ही पर्याप्त है। लोक अभिनन्दन प्राप्त करने के लिए उसे लालायित नहीं होना चाहिए और न ही विचारशील व्यक्तियों को उसे अभिनन्दित करने की चेष्टा करनी चाहिए। धनिकों के लिए भी यही बात लागू होती है। कोई व्यक्ति अमीर बना, सम्पति कमाई, धनवान और भाग्यवान कहलाया, उस अर्जित सम्पदा से उसके अहंकार की पूर्ति हुई, विलास-वैभव के साधन मिले। इसमें यश की क्या बात? कोई उसकी प्रशंसा क्यों करे? उससे कोई क्यों प्रभावित हो? उन्होंने जो कुछ प्रयत्न-पुरुषार्थ किया, उसका लाभ उन्हें मिल गया।

सम्मान उन्हें दिया जाना चाहिए जिन्होंने अपनी भौतिक महत्वांकाक्षाओं से मुँह मोड़कर परमार्थ प्रयोजनों के लिये अपनी सामर्थ्य लुटा दी। जिन्होंने अपनी सारी सामर्थ्य, महत्वाकांक्षा तथा सम्भावनाओं को परमार्थ के लिये लुटा दिया, अभिनन्दन उनका किया जाना चाहिए। जिनका पुरुषार्थ अपने निज के लिये नहीं, दूसरों के लिये काम आया और उच्च आदर्शों के लिये जिन्होंने स्वयं को खाली हाथ रखने के लिए तैयार रखा, उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर कम से कम कुछ तो यह भार हलका किया जाना चाहिए। यह इस बात का भी द्योतक होगा कि जनमानस में कम से कम उत्कृष्टता के लिये श्रद्धा दे सकने की वृत्ति तो जीवित है। इससे उन त्यागी, परमार्थ परायण नर शार्दूलों को भी सन्तोष होगा कि उनकी सेवा-साधना और निज समर्पण को स्वीकारा तथा महत्त्व दिया गया है।

वाङ्मय 64/5.46 से संकलित, सम्पादित

स्वदेशी आन्दोलन को ढंग से समझने और गति देने की जरूरत है

शोषण के विदेशी कुचक्र को तोड़ें, साथ ही पोषण के स्वदेशी तंत्र को बढ़ावा दें

(गतांक 1 नवम्बर के आलेख की पूरक कड़ी)

गहन समीक्षा-प्रखर प्रयास

पहले यह स्पष्ट संकेत किए जा चुके हैं कि भारत की महानता के पीछे यहाँ की सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सामाजिक स्वावलम्बन की प्रवृत्ति रही है। भारत ग्राम प्रधान देश रहा है। इसकी प्रत्येक छोटी-बड़ी इकाई अपने आप में समग्र स्वावलम्बन के लिए साधनारत रहती थी। विदेशी शासकों ने अपने निहित स्वार्थों के कारण उस व्यवस्था को कमजोर एवं छिन्न-भिन्न करने का कुचक्र रचा था। अभी भी हम उससे उबर नहीं पाये हैं। इसके लिए हमें वस्तुस्थिति की गहन समीक्षा करनी होगी और लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रखर-प्रयासों का जीवन्त क्रम चलाना होगा।

उक्त गौरवमय स्तर फिर से प्राप्त करने के लिए हमें मुख्य रूप से दो प्रकार के योजनाबद्ध कार्य करने होंगे -

1. **शोषण के विदेशी कुचक्र को समझना और उसे तोड़ना**
2. **पोषण के स्वदेशी तंत्र को स्वीकार करना और उसे बढ़ाना देना।**

यह दोनों विषय एक-दूसरे के पूरक हैं। दोनों को समानान्तर ढंग से एक साथ गति देना जरूरी है। यदि विदेशी सामान रोक दिया और स्वदेशी प्रामाणिक उत्पाद तैयार नहीं है तो जरूरतें कैसे पूरी होंगी? इसी प्रकार यदि विदेशी कुचक्र के सम्मोहन में स्वदेशी उत्पादों को बाजार ही न मिले तो क्या होगा? इसलिए विवेकपूर्वक दोनों प्रयासों को एक साथ चलाना होगा। इनके पीछे सन्निहित स्थायी हानि-लाभ की बारीकियों को भी समझना होगा।

विदेशी का बहिष्कार

विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार की बात किन्हीं विशेष संदर्भों में ही जरूरी होती है। यदि उन्नत तकनीक और विशिष्ट कौशल की बात है, तब तो उसे स्वीकार ही किया जाना उचित है। किन्तु जिन वस्तुओं के उत्पादन में कोई खास तकनीक या विशेष कौशल जरूरी नहीं है उन्हें विदेश से लेकर देश के अपने उद्यमियों को उपेक्षा और अभाव में ठेल देना किसी भी तरह उचित नहीं। केवल सस्तेपन या आकर्षक विज्ञापनों से प्रभावित होकर विदेशी उत्पादों को महत्त्व देने लगना एक प्रकार से अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने जैसा ही कहा जा सकता है। चतुर व्यवसायी मनुष्य की इन सहज दुर्बलताओं को समझते हैं और इस प्रकार के आकर्षण पैदा करके अपना उल्लू सीधा करते रहते हैं। कुछ समय सस्ता माल बेचकर बाजार अपने काबू में कर लेते हैं, फिर स्थानीय तंत्र कमजोर पड़ जाने पर अनापशनाप शोषण करने लगते हैं। कुछ उदाहरण देखें-

विज्ञापनबाजी :- लोगों तक अपने उत्पाद की जानकारी पहुँचाने की दृष्टि से तो विज्ञापन उचित है, लेकिन भड़काऊ प्रदर्शन द्वारा लोगों को सम्मोहित करके ठगी करने के हथियार के रूप में इन्हें उचित नहीं ठहराया जाता। भारत की भोली जनता चालाकों के मायाजाल में फँसकर ठगी जाती रही है। जैसे-

अंग्रेज सोने की चिड़िया माने जाने वाले भारत को अपने लाभ के लिए खोजते आये थे। बाद में उन्होंने भोले भारतवासियों को यह बहकाना शुरू कर दिया कि तुम्हारे पास जो है वह सब घटिया है और अंग्रेजों के पास जो है वह सब बढ़िया है। वे अपनी रणनीति में सफल हुए और भारतीयों को मानसिक गुलामी का शिकार बना दिया। परिणाम :-

- हमारे यहाँ की सहज शिक्षा व्यवस्था को तोड़ दिया और शिक्षा को अपने लिए व्यवसाय और भारतवासियों के मन में हीनता पैदा करने का साधन बना लिया।
- गाँवों की पंचायतों की सहज उपलब्ध न्याय व्यवस्था चौपट हो गयी और खर्चीली एवं जटिल न्याय व्यवस्था हम पर थोप दी गयी।
- ग्रामोद्योग कमजोर पड़ गये और गाँववाले शहरी और बाहरी उत्पादन के मुहताज हो गये। सोने की चिड़िया कहलाने वाला देश गरीब, लाचार देश माना जाने लगा।

मानसिक गुलामी :- विदेशी वस्तु लेने में शान है, इस मानसिक गुलामी से हम अभी उबरे नहीं हैं। एक संस्मरण देखें-

कच्छ, गुजरात के एक परिजन अमेरिका में बस गये थे। भारत आते समय उन्होंने अपने भारतीय मित्र से पूछा कि आपके लिए क्या भेंट लायें? उस समय 'मिक्सी' मशीन प्रसिद्धि पा रही थी। मित्र ने कहा कि जो मिक्सी सबसे अच्छी मानी जाती हो, वह हमारे लिए ले आयें। प्रवासी भाई ने दुकानदार से यही बात कही और एक मिक्सी पैक करा ली। गुजरात पहुँच कर अपने मित्र को भेंट की। खोलने पर देखा कि वह तो 'काँडला बन्दरगाह' से भेजी गयी भारतीय मिक्सी है। यह देख मित्र खिन्न हो गये, बोले-यह क्या ले आये? प्रवासी भाई ने कहा- मैंने सबसे अच्छी मिक्सी माँगी थी, उसने बड़े विश्वास के साथ यही दी।

भारतीय मित्र को इस बात की खुशी नहीं हुई कि हमारे देश का माल विदेश में श्रेष्ठ माना जा रहा है। उन्हें दुःख हुआ कि वे विदेशी माल रखने की शान नहीं दिखा पाये। यह कैसी मानसिकता है?

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की लैब के लिए सामान लेने शांतिकुंज प्रतिनिधि अम्बाला कैण्ट गये। वहाँ एक विदेशी सूचीपत्र (कैटलॉग) में उस समय के अनुसार एक बहुत उन्नत किस्म के सूक्ष्मदर्शक यंत्र (माइक्रोस्कोप) को देखा। उसकी कीमत ₹14000/- छपी थी। वहाँ एक विशेषज्ञ परिजन से उसकी चर्चा की। उसने अपनी फैक्ट्री से उसी स्तर की तैयार होती मशीन दिखाई। कहा हम इसे ₹3000/- के आसपास में बेचेंगे, आपके लिए और सस्ती तैयार कर देंगे।

आश्चर्य के साथ पूछा-वह कैसे संभव है? यदि है तो यही क्यों नहीं बेचते? वे मुस्कराकर बोले, ''ऐसी तमाम चीजें भारत में बनती हैं। विदेश वाले ले जाते हैं और रंग-रोगन बदल कर अपना ठप्पा लगा कर हमीं को महँगे दामों में बेच देते हैं। यहाँ सरकारी तंत्र हमें बार-बार चक्कर कटवाता है और उनके लिए पेशगी चैक भेजकर माल मँगाता है। विदेश वाले क्वालिटी देखकर हमें पेशगी भुगतान कर देते हैं, इसलिए हम उन्हीं को बेचते हैं?

- **'विदेश है सो अच्छा'** इस मानसिक गुलामी के रहते देश के उत्पादों के साथ न्याय नहीं हो पाता। इस मानसिकता से उबरें, तो बात बन जाय।
- आलू चिप्स, टूथपेस्ट, मैगी, नूडुल्स, पटाखे, बिजली की झालरें आदि में कोई विशेष तकनीक नहीं, फिर भी विज्ञापनबाजी के आधार पर विदेशी कम्पनियाँ हमारे बाजार पर हावी हैं। वे कुचक्र रचते हैं और लाभ कमाते हैं, हम उसमें फँसते हैं और जेब कटाते हैं। इस मूर्खता से उबरना ही पड़ेगा।

कम्पनियों ने विज्ञापन दिए कि बच्चों के लिए डिब्बे का संतुलित दूध माँ के दूध से अधिक फायदेमंद है, हमने मान लिया। कई दशकों के बाद यह भ्रम टूटा। तब तक कम्पनियों ने तो हमें मूर्ख बना कर लूट मचा ही ली।

- लिपस्टिक जैसी चीज क्या है? मोम, रंग और सुगन्धि। इसमें क्वालिटी का कितना अंतर पड़ सकता है? बस दो-चार रुपये का। वही चीज आकर्षक पैकिंग में ब्राण्ड के नाम पर सैकड़ों रुपये में बिकती है। इसमें औचित्य कहाँ है?

कहने का तात्पर्य यह है कि विदेशी नाम या आकर्षक विज्ञापन एवं पैकिंग के सम्मोहन से बचकर ही स्वदेशी को प्रतिष्ठित किया जा सकता है।

बात सस्तेपन की :- चमकदमक के साथ सस्तेपन का भी अपना आकर्षण होता है। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने बंगाल के नवाब को खुश करके अपने माल पर से 'टैक्स' माफ करा लिया और भारत के बाजार पर हावी हो गये। उसी से बढ़ी हुई शक्ति से उन्होंने हमारे देश को अपना उपनिवेश भी बना लिया।

शुरू में सस्ता माल बेचकर बाजार को कब्जे में ले लेना और फिर अर्थ व्यवस्था पर हावी होकर शोषण का चक्र चला देने की कुटिल व्यापारियों की पुरानी चाल रही है। चीन सहित कई यूरोपीय देश भी यह कूटनीति अपना रहे हैं।

- अपने यहाँ प्रतिबंधित दवायें वे विज्ञापनबाजी और सस्ते के नाम पर भारत में बेच रहे हैं। चीन भारतीय भू-भाग हथियाने की कोशिश कर ही चुका है, अब बाजार हथिया कर देश पर आर्थिक पकड़ बनाना चाहता है। भारत से ही कमाई करके उसे भारत के ही विरुद्ध प्रयुक्त करने के उसके इरादे साफ दिखाई देते हैं। ऐसे में चीनी उत्पादों का बहिष्कार (बाइकॉट) करना भी जरूरी हो गया है। जनता तथा सरकार दोनों को इस दिशा में जागरूकता लानी होगी।

जनता : जनता जापान वासियों की तरह स्वदेशी वस्तुओं को ही महत्व देने की मानसिकता बनाये। यदि गुणवत्ता कम हो तो अपने ही लोगों को कुशल बनाने के प्रयास किए जाने चाहिए। उत्पादन में तकनीक का इस्तेमाल करने और अधिक खपत होने से देशी माल विदेशी की अपेक्षा महँगा भी नहीं रहेगा।

सरकार : यदि जनता आयातित वस्तुओं की गुणवत्ता नहीं समझती और सस्तेपन के सम्मोहन में विदेशी माल खरीदती है तो इस स्थिति में सरकार को जागरूक और सक्रिय होना होगा। जैसे :-

- विदेशों में प्रतिबंधित दवायें या अधिक घातक रसायनों वाले पटाखे या पदार्थ देश में आने ही न दिया जायें।
- जिन वस्तुओं का उत्पाद देश में सहज संभव है, उनके संरक्षण और विकास के लिए विदेश से आने वाली उन वस्तुओं पर सख्त आयात शुल्क लगाये जायें।

सार्वभौमता के नाम पर इस बारे में ढिलाई नहीं बरती जानी चाहिए। इस सम्बन्ध में सार्वभौमता के कथित ठेकेदारों को राष्ट्रसंत विनोबा भावे ने सटीक उत्तर दिये थे।

गाँधी जी के समाधान

ग्राम स्वराज्य नामक पुस्तक में विनोबा भावे ने स्पष्ट लिखा है - *स्वदेशी एक सार्वभौम धर्म है। हर मनुष्य का पहला कर्त्तव्य अपने पड़ोसियों के प्रति है। इसमें परदेश के प्रति द्वेष नहीं है और स्वदेशी के लिए पक्षपात नहीं है। शरीरधारी की सेवा करने की शक्ति की मर्यादा होती है। वह अपने पड़ोसियों के लिए भी मुश्किल से अपना धर्म पूरा कर सकता है। अगर पड़ोसी के प्रति सब कोई अपना धर्म अच्छी तरह पाल सकें, तो दुनिया में मदद के बिना कोई दुःख न भोगे। इसलिए यह कहा जा सकता है कि मनुष्य पड़ोसी की सेवा करके दुनिया की सेवा करता है। असल में तो इस स्वदेशी-धर्म में अपने-पराये का भेद ही नहीं है। पड़ोसी के प्रति धर्म-पालन करने का अर्थ है जगत के प्रति धर्म-पालन। औरकिसी तरह से दुनिया की सेवा हो ही नहीं सकती। जिसकी दृष्टि में सारा जगत ही कुटुम्ब है, उसमें अपनी जगह पर रहकर भी सबकी सेवा करने की शक्ति होनी चाहिये। वह तो पड़ोसी की सेवा के द्वारा ही हो सकती है।*

'मेरे लिए सब बराबर हैं।' यह कहने का अधिकार उसी को है, जिसने पड़ोसी के प्रति अपना धर्म पाला हो। 'मेरे लिए सब बराबर हैं।' यह कहकर जो पड़ोसी का तिरस्कार करता है और अपने शौक पूरे करता है, वह स्वेच्छाचारी है, स्वच्छन्द है। वह अपने ही लिए जीता है।

अगर हम स्वदेशी के सिद्धान्त का पालन करें तो हमारा और आपका यह कर्तव्य होगा कि हम उन बेरोजगार पड़ोसियों को ढूढ़ें, जो हमारी आवश्यकता की वस्तुएँ हमें दे सकते हों, और यदि वे इन वस्तुओं को बनाना न जानते हों तो उन्हें हम उनकी प्रक्रिया सिखायें। ऐसा हो तो भारत का हर एक गाँव लगभग एक स्वाश्रयी और स्वयंपूर्ण इकाई बन जाये। दूसरे गाँवों के साथ वह ऐसी कुछ वस्तुओं का आदान-प्रदान जरूर करेगा, जिन्हें वह खुद अपनी सीमा में पैदा नहीं कर सकता।

गाँवों और इस माध्यम से ग्राम-प्रधान देश का आर्थिक स्वावलम्बन इसी प्रकार के विवेकपूर्ण संतुलित प्रयासों से संभव होगा।

समग्र स्वावलम्बन की ओर

पहले भी संकेत किया जा चुका है कि देश को स्वावलम्बी गौरवपूर्ण बनाने के लिए आर्थिक स्वावलम्बन भी जरूरी है, किन्तु यही सब कुछ नहीं है। स्वावलम्बन के सभी पक्षों को पुनर्जाग्रत् करना होगा। तभी देश अपने पैरों पर खड़ा हो सकेगा। संत विनोबा ने ग्राम स्वराज्य में लिखा है :-

अपने पैरों पर खड़े होने का मतलब है लोग सामूहिक रूप से संगठित हों, अपने आपसी झगड़ों को गाँव के समझदार आदमियों की पंचायतों द्वारा निपटाने का प्रबन्ध करें और गाँव की सफाई, आरोग्य और साधारण बीमारियों के उपचार की सामूहिक व्यवस्था कर लें। इसके लिए केवल व्यक्तिगत प्रयत्नों से काम नहीं चलेगा। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि गाँवों को चोरों और डाकुओं से सुरक्षित रखने के लिए गाँववालों में संयुक्त प्रयत्नों द्वारा आत्म-विश्वास की भावना पैदा करनी होगी। सामुदायिक अहिंसा इसका सर्वोत्तम उपाय है। लेकिन यदि कार्यकर्त्ताओं को अहिंसा का मार्ग स्पष्ट न दिखाई पड़े, तो उन्हें हिंसा द्वारा सामूहिक आत्मरक्षा का संगठन करने में झिझकना नहीं चाहिये।

जरूरी यह है कि ग्राम पंचायतें, ग्राम सभाएँ फिर से अपने नैतिक, सांस्कृतिक दायित्व सँभालने योग्य बनें। सांस्कृतिक गरिमा (दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन-सत्प्रवृत्ति संवर्धन), शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय, स्वच्छता, ग्रामोद्योग आदि सभी तंत्रों को समर्थ और प्रामाणिक बनाने का संकल्प और कौशल उभरे। इसके लिए सभी ग्रामवासी समयदान और अंशदान करें। राष्ट्र-समर्पित प्रतिभाएँ उनके नियोजन और विकास में रुचि लें तो कुछ ही समय में भारत अपनी प्राचीन समग्र स्वावलम्बन की क्षमता को फिर से जाग्रत्-विकसित कर सकता है। हमारे देशवासी स्वभावतः भावनाशील हैं, प्रतिभा की भी कमी नहीं है। आवश्यकता सही दिशा में विचार करने और संकल्प जगाने भर की है। शुरुआत हो गयी है, उसे क्रांतिकारी गति देने के लिए हम कमर कसकर खड़े हो जायें।

स्वच्छता, सेवा, सृजन अभियानों में गहरी रुचि ले रही है तरुणाई

युवा संगठन दिया के कार्यकर्त्ताओं द्वारा सार्वजनिक स्थानों की सफाई

कुर्ला रेलवे स्टेशन पर कार्यालयों और पुल की सफाई करते विद्यार्थी

रघुनाथ नगर, ठाणे की सड़कों की सफाई

हड़पसर, पुणे बस स्टैण्ड पर सफाई के बाद सद्वाक्यों के बैनर लगवाते कार्यकर्त्ता

कुर्ला रेलवे स्टेशन पर

कुर्ला, मुम्बई (महाराष्ट्र)

दिया, मुम्बई ने गुरु नानक इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेण्ट स्टडीज़ के साथ मिलकर मध्य रेलवे के अत्यंत व्यस्त स्टेशन कुर्ला पर स्वच्छता अभियान चलाया। गायत्री परिवार के इस दल ने स्टेशन के प्लेटफॉर्म की सफाई ही नहीं की, बल्कि वहाँ के शौचालयों, पुलों, पानी के नलों, विभिन्न कार्यालयों, टिकिट काउण्टरों को भी साफ-सुथरा कर दिया। विद्यार्थियों ने स्वच्छता के प्रति सजगता बरतने के लिए यात्रियों को भी जागरूक किया। इस स्वच्छता महाभियान में 40 से 50 बड़े-बड़े बैग भरकर कूड़ा-कचरा विभिन्न स्थानों से एकत्रित किया गया और उचित स्थान तक पहुँचाया गया।

स्थानीय दिया संगठन ने विद्यार्थियों की तरह ही अन्य जागरूक संस्थाओं को साथ लेकर इस तरह के प्रयास आगे भी जारी रखने का उत्साह दरशाया है। श्री जतीन दवे ने कहा कि इस तरह के प्रयास जनमानस पर गहरा प्रभाव डालते हैं।

क्लीन अप ठाणे अभियान

ठाणे (महाराष्ट्र)

23 अक्टूबर को दिया, ठाणे के युग सैनिकों ने महानगर पालिका द्वारा चलाये जा रहे 'क्लीन अप ठाणे' अभियान में भागीदारी करते हुए स्वच्छता के प्रति जागरूकता का एक आदर्श प्रस्तुत किया। कार्यकर्त्ताओं ने रघुनाथ नगर के आसपास की गली, सड़क, बस स्टैण्ड आदि की सफाई की। तीन घंटे चले स्वच्छता अभियान में पूरा क्षेत्र शीशे की तरह स्वच्छ दिखाई देने लगा।

हड़पसर बस स्टैण्ड का कायाकल्प

पुणे (महाराष्ट्र)

दिया, हड़पसर शाखा के लगभग 20 सदस्यों की टोली ने पीएमपीएल बस स्टैण्ड की बड़ी अच्छी तरह से सफाई की। जगह-जगह बिखरे कागजों के टुकड़े, पान की पीक, कार्यालयों में लगे जाले, धूल की परतें साफ की गयीं। शौचालय, वॉश बेसिन आदि धोकर साफ किये गये। सफाई से पहले और बाद की तसवीरें सहज ही लोगों को प्रभावित कर रही थीं। दिया कार्यकर्त्ताओं ने वहाँ चालक, कण्डक्टर, प्रबंधक एवं अन्य कर्मियों की गोष्ठी लेकर स्वच्छता को राष्ट्र-निर्माण का एक महत्त्वपूर्ण अभियान मानने तथा इस ओर ध्यान देने का आग्रह भी किया।

बड़े-बड़े बैनर व सद्वाक्य भी लगाये

युवा कार्यकर्त्ताओं ने 'प्रोजेक्ट दृष्टिकोण' के अन्तर्गत पीएमपीएल बस स्टैण्ड पर सद्वाक्य भी लगाये। 21 अक्टूबर को श्री दिनेश मिश्रा और प्रताप जी के नेतृत्व में चलाये गये अभियान में अनेक कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। बस स्टैण्ड के बाहरी क्षेत्र में जहाँ 5 फीट चौड़े विशाल बैनर लगाये गये वहीं कमरों में सनबोर्ड पर लिखे विभिन्न महापुरुषों के सद्वाक्य लगाये गये, जो वर्षों तक वहाँ के लोगों को प्रेरणा देते रहेंगे। बस स्टैण्ड प्रबंधक युवा रक्त में दिखी राष्ट्रीयता की भावना से बहुत प्रसन्न और प्रभावित थे।

बढ़ते तापमान से बचने के लिए पथरीले पहाड़ को बना दिया जंगल

मुसाबनी, जमशेदपुर (झारखंड)

- हर गाँववासी हर वर्ष करता है वृक्षारोपण
- 2003 से आरंभ हुआ अभियान
- अब तक लगाये 20000 पेड़
- हर वर्ष 5 जून को लगता है मेला

वर्ष-दर-वर्ष बढ़ती गरमी ने मुसाबनी प्रखण्ड के माटीगोड़ा पंचायत के गाँव सीताडांगा के लोगों को गरमी ने बेहाल कर दिया था। गर्मियाँ शुरू होते ही लू आरम्भ हो जाती थी और फिर पूरी गर्मी बीमारी, जल संकट, तपन से गाँव बेहाल रहा करता था। ऐसी विकट परिस्थितियों में गाँव वालों ने सन् 2003 में बगराई मार्डी के नेतृत्व में एक साहसिक फैसला लिया। उन्होंने पहाड़ पर सघन वृक्षारोपण करने का फैसला लिया। काम कठिन था, लेकिन जब गाँववालों ने ठान ली तो कमाल हो गया।

सीतागाँव की पहाड़ी पर अब तक 20,000 से ज्यादा पेड़ लगाये जा चुके हैं। हर वर्ष हर गाँववासी वृक्षारोपण करता है और उनकी सुरक्षा भी। गाँववासी जंगल से साल के बीज बटोर लाते हैं और वर्षा आने पर उन्हें बिखेर देते हैं। हर वर्ष हजारों पेड़ लगाये जाते हैं। इन पेड़ों के साथ ही उगती हैं गाँववासियों की खुशियाँ और समृद्धि। जिस गाँव में सुबह नौ बजे के बाद बाहर निकलना मुश्किल था, वह अब अनेक समस्याओं से निजात पा चुका है।

पर्यावरण दिवस पर लगता है मेला

गाँव की पहाड़ी पर हर वर्ष 5 जून को मेला लगता है। उस दिन हर गाँववासी एक पौधा लगाता है। मनोरंजक कार्यक्रम और निःशुल्क सामूहिक वन भोज भी होता है। जिला पार्षद बागराई मार्डी के नेतृत्व में बनी कमेटी सारे कार्यों की व्यवस्था करती है।

सौजन्य-श्री रामप्रताप साहू, जयपुर (ओडिशा)
(प्रभात खबर, 21 अगस्त 2016)

पीड़ित मानवता की सेवा के विविध अभियान

दुःख बँटाया, फल-साहित्य बाँटे

मरीजों को फल देते युग परिवर्तन संघ के कार्यकर्त्ता

मालाड, मुम्बई (महाराष्ट्र)

दिया, मुम्बई के कार्यकर्त्ता 23 अक्टूबर को युग परिवर्तन संघ के सदस्यों के साथ बृहन मुम्बई महानगर पालिका के एसके पाटिल हॉस्पिटल, मालाड पहुँचे। युग परिवर्तन संघ गायत्री परिवार द्वारा समाज सेवा के लिए प्रेरित संस्था है, जिसके साथ कई अन्य संस्थाएँ भी जुड़ी हुई हैं।

सेवार्थ अस्पताल पहुँचे स्वयंसेवकों ने वहाँ के 150 मरीज, डॉक्टर एवं स्टाफ से भेंट की, उनकी कुशलता जानी और उनके जल्दी ठीक होने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। मरीजों को फल, नारियल पानी, बिस्किट आदि दिये गये। डॉ. डीएस तिवारी ने मरीजों को रोगों से बचाव और योग साधना से उपचार संबंधी जानकारियाँ दीं, तत्संबंधी साहित्य भी बाँटा गया।

देव संस्कृति महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा रक्तदान

सीसवाली, बाराँ (राजस्थान) : परम पूज्य गुरुदेव के जन्म दिवस पर सीसवाली शाखा ने रक्तदान शिविर का आयोजन किया। इस शिविर में कुल 85 यूनिट रक्तदान हुआ। देव संस्कृति महाविद्यालय, सीसवाली की छात्राओं ने भी रक्तदान में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

रोग प्रतिरोधक काढ़ा वितरण

2500 लोग लाभान्वित

बोरगाँव, सौंसर, गोंदिया (महाराष्ट्र) : देश के विभिन्न नगर, गाँवों में बढ़ते डेंगू, चिकनगुनिया, टायफाइड, स्वाइन फ्लू, पीलिया जैसे रोगों से लोगों को बचाने के लिए युवा प्रकोष्ठ बोरगाँव और आयुर्वेदिक सेवा समिति सौंसर ने प्रशंसनीय पहल की। उन्होंने 14 अक्टूबर को एक शिविर लगाकर लोगों को इन रोगों से बचाव के लिए निःशुल्क आयुर्वेदिक काढ़े का सेवन कराया। 2500 से अधिक लोगों ने इसका लाभ लिया।

यह काढ़ा 33 जड़ी-बूटियों के मिश्रण से बनाया गया था। इन रोगों के मरीजों को उनके उपचार के लिए सरल आयुर्वेदिक उपचार भी बताये गये। शक्तिपीठ सौंसर पर चल रहे मौन साधना शिविरों में जीवनी शक्ति वर्धक कल्क सेवन कराया गया।

संकल्प की सफल पूर्णाहुति, 1000 पौधे लगाये

कटनी (मध्य प्रदेश) : गायत्री परिवार के तत्त्वावधान में वीडियो कॉन्फ्रेंस भोपाल द्वारा होमगार्ड कमाण्डेण्ट कटनी में वृक्षारोपण किया गया। इसके अंतर्गत डिस्ट्रिक्ट कमाण्डेण्ट श्री नरेश ठाकुर, स्थानीय वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री अरुण पाठक, श्री दिग्विजय सिंह सोलंकी, शंकरलाल सोनी आदि के सहयोग से 120 पौधे रोपे गये।

होमगार्ड स्टेशन, कटनी में हो रहा वृक्षारोपण

कटनी शाखा ने इस वर्षा ऋतु में 1000 पौधे लगाने का संकल्प लिया था, जिसे उन्होंने सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है। इसके अंतर्गत झलवारा में 680 पौधे लगाये गये। ग्राम हिरवारा में तरुपुत्र यात्रा और विशाल दीपयज्ञ के साथ वृक्षारोपण का कार्यक्रम आयोजित हुआ। खरहटा में 150, हाथीकुरी में 100 तथा लखेरा आदि अन्य गाँवों में भी सामूहिक वृक्षारोपण के कार्यक्रम आयोजित हुए।

तुलसी रोपण अभियान

खीरी लखीमपुर (उ.प्र.)

स्थानीय युवा प्रकोष्ठ द्वारा कार्तिक मास में घरों में तुलसी स्थापना का विशेष अभियान चलाया गया। इसका शुभारम्भ मोहल्ला बड़खेरवा में महिला मंडल द्वारा घरों में तुलसी के पौधे पूजित करके स्थापित किए जाने से हुआ। अभियान संयोजक अनुराग मौर्य के अनुसार यह अभियान पूरे कार्तिक मास में घर-घर तुलसी के पौधे रोपे जायेंगे और उनकी स्वास्थ्य एवं अध्यात्म संबंधित महत्ता बतायी जायेगी।

200 पौधे लगाये

बल्दीपुरवा, बहराईच (उत्तर प्रदेश)

युवा क्रांति वर्ष की विशेष सक्रियता के अंतर्गत विकास क्षेत्र चित्तौरा के गाँव बल्दीपुरवा में बल्दीसमय माता मंदिर परिसर में बृहद् वृक्षारोपण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। श्री जयप्रकाश वर्मा आदि युवाओं ने पौधों का पूजन करते हुए पर्यावरण संरक्षण के लिए जनमन में आस्था जगायी। तत्पश्चात् लगभग 200 पौधे रोपे गये, उनके संरक्षण-सिंचन के संकल्प दिलाये।

चल पड़ा 'गर्भ संस्कार' का सशक्त अभियान

बहराईच (उत्तर प्रदेश)

न्याय पंचायत एरिया में गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं ने अपने गाँव में पुंसवन संस्कार का एक प्रभावशाली अभियान चलाया है। इसके द्वारा न केवल गर्भवती बहिनों का पुंसवन संस्कार कराया जाता है, बल्कि प्रसव होने तक उनके स्वाध्याय और स्वास्थ्य संबंधी देखभाल भी की जाती है।

यह अभियान आँगनवाड़ी कार्यकर्त्ता सुश्री शीला श्रीवास्तव के सहयोग से चल रहा है। जगह-जगह गर्भ संस्कार संबंधी वीडियो दिखाये जा रहे हैं। हर धर्म-वर्ग के लोगों को पुंसवन संस्कार की वैज्ञानिकता समझायी जा रही है। आज की विशाक्त वातावरण और दूषित जीवन शैली से भावी एवं नवजात शिशुओं को बचाने की प्रेरणा दी जा रही है।

अपने कर्त्तव्यों का बोध और उन पर खरे उतरने की चेष्टा मनुष्य को महानता की ओर अग्रसर करती है। अधिकारों की चाह रखने वाले प्रायः अतृप्त-अशांत देखे जाते हैं।

प्रज्ञा अभियान
16 नवम्बर 2016

शक्ति साधना पर्व नवरात्रि में हुए समाज सेवा के विशिष्ट प्रयोग

आसुरी शक्तियों को निरस्त करने के लिए हुए आध्यात्मिक प्रयोग

- शहीदों को दी गयी श्रद्धांजलि
- मंत्रलेखन प्रतियोगिता भी आयोजित हुई

बड़वानी (मध्य प्रदेश)
बड़वानी जिले के गायत्री शक्तिपीठ अंजड़, जुलवानिया, खेतिया और बड़वानी में नवरात्रि पर्व बड़ी श्रद्धा के साथ मनाया गया। साधकों ने व्यक्तिगत सुख-समृद्धि के साथ राष्ट्र को समर्थ-सशक्त बनाने के लिए विशेष प्रयोग भी किये। प्रतिदिन गायत्री मन्त्र 'क्लीं' बीजयुक्त गायत्री मंत्र एवं महामृत्युंजय मन्त्र के साथ आहुतियाँ समर्पित की गईं। दसवें दिन नौ कुण्डीय यज्ञ के साथ पूर्णाहुति हुई। इस अवसर पर राष्ट्र की रक्षा के लिए शहीद हुए सैनिकों की आत्मशान्ति एवं सद्गति हेतु विशेष आहुतियाँ दी गयीं। विविध संस्कार भी हुए। श्री नीरज सिंह ने प्रतिदिन ध्यान साधना एवं सामूहिक जप कराया।

जुलवानिया में श्री प्रभाकान्त तिवारी एवं श्री महेन्द्र भावसार ने नौ दिनों तक प्रतिभागियों को गुरुवर के विचारों का अमृत का पान कराया। उन्होंने राष्ट्र की रक्षा में समर्पित सैनिकों का सम्मान करते हुए चीन में बनी वस्तुओं का बहिष्कार करने, स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करने की प्रेरणा दी। तीस भाई-बहिनों ने गायत्री मन्त्र की दीक्षा ली।

बड़वानी में मन्त्र लेखन प्रतियोगिता आयोजित हुई, जिसमें कक्षा पाँचवीं से लेकर नौवीं तक के 300 विद्यार्थियों ने भाग लिया। पं. गोपाल कृष्ण ने प्रतियोगिता का संचालन किया।

गायत्री शक्तिपीठ खेतिया सामूहिक जप, ध्यान एवं यज्ञ के साथ महिला मण्डल ने ज्ञानयज्ञ भी किया। उन्होंने नगर के विभिन्न वॉर्डों में साहित्य वितरित किया।

मुम्बई में हुए अनेक आयोजन, सुविचार और सेवाभाव का विस्तार

मुम्बई (महाराष्ट्र)
मुम्बई में अनेक स्थानों पर नवरात्रि साधना पर्व के निमित्त कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। निर्माणाधीन चेतना केन्द्र, गायत्री शक्तिपीठ नालासोपारा, प्रज्ञा केन्द्र दहिसर, प्रज्ञापीठ ठाणे एवं अणुशक्ति नगर में सामूहिक नवरात्र अनुष्ठान एवं गायत्री यज्ञ आयोजित हुए।

रॉक एन्क्लेव चारकोप (कान्दिवली), एकता मीडोज बोरीवली एवं अँधेरी स्थित यज्ञशाला, सनसिटी भिवंडी, लोखंडवाला में भी सामूहिक जप, गायत्री यज्ञ व दीपयज्ञ आयोजित करके सबके सुख समृद्धि हेतु प्रार्थना की गयी। फैशन मार्केट सार्वजनिक नवरात्रि उत्सव मंडल एवं भगवती मित्र मंडल (भूलेश्वर) में प्रोजेक्ट दृष्टिकोण के अन्तर्गत पूज्य गुरुवर के सद्वाक्यों के बैनर, बोर्ड, साहित्य फोल्डर लगाए गए।

प्रज्ञा केन्द्र ठाणे में रक्तदान करते युवा

थैलीसीमिया के रोगियों के लाभार्थ रक्तदान

प्रज्ञा केन्द्र ठाणे में साधना के साथ सेवाधर्म जोड़ते हुए रक्तदान शिविर भी अयोजित किया गया। यह शिविर थैलीसीमिया के रोगी बच्चों के लाभार्थ आयोजित किया गया था। इसमें 50 यूनिट रक्तदान हुआ।

अनुभूत ज्ञान की प्रस्तुति एवं प्रेरक संस्मरणों ने युगशक्ति के प्रति आस्था बढ़ायी

व्याख्यानमाला

नौ दिन अलग-अलग क्षेत्रों में हुए व्याख्यान

उज्जैन (मध्य प्रदेश)
आश्विन नवरात्रि में गायत्री शक्तिपीठ ने प्रतिदिन सायंकाल अलग-अलग स्थानों पर जीवन पथ प्रदर्शक व्याख्यानों का आयोजन किया। इनके माध्यम से लोगों को नवरात्रि जैसे महत्त्वपूर्ण समय में भगवान को मनाने और मनोकामनाएँ पूरी करने के लिए जप-पाठ करने जैसी ओछी मानसिकता को त्यागकर आत्मोत्कर्ष के लिए प्रयत्न करने की प्रेरणा दी गयी। लोगों को सरल, सर्वहितकारी गायत्री साधना, उसके विधि-विधान और उसकी असीम सामर्थ्य का बोध कराया गया।

गायत्री माता की शक्ति-सामर्थ्य, उपासना के दो चरण जप और ध्यान, ध्यान की सरल विधि, ऋतु संध्यायें हैं नवरात्रियाँ, नवरात्रियों में शक्ति उपासना, संघशक्ति की लाल मशाल, साधना से सिद्धि, आदि विषयों पर व्याख्यान हुए। सर्वश्री जेसी श्रीवास, डॉ. शशिकांत शास्त्री, एमएल रणबल, जीवन प्रकाश आर्य, देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, आरसी लेबे, पीएस तोमर ने अपने जीवन के अनुभवों को गूँथते हुए विषयों का सारगर्भित एवं प्रभावशाली प्रतिपादन किया। ये व्याख्यानकर्त्ता वे लोग थे जिन्होंने परम पूज्य गुरुदेव के विचारों को गहराई से पढ़ा है और अपने जीवन में अपनाया भी है।

कार्यक्रमों की अध्यक्षता क्षेत्र के प्रतिष्ठित विद्वानों ने की। इस व्याख्यानमाला से लोगों में आत्मोत्कर्ष की हूक जगाने के साथ साधक स्तर के व्याख्यानकर्त्ताओं की खोज में भी बड़ी सफलता मिली।

दशहरा मिलन समारोह
गायत्री शक्तिपीठ अकंपात द्वार में विजया दशमी के दिन प्रज्ञा परिजनों का दशहरा मिलन आयोजित हुआ जिसमें बड़ी संख्या में उज्जैन के गायत्री परिजनों ने भाग लिया। मध्य जोन प्रभारी शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री विष्णुभाई पण्ड्या की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा बढ़ायी, अपनी बुराइयों पर विजय हासिल करते हुए युग निर्माण अभियान में पूर्ण समर्पण भाव से जुटकर जीवन धन्य बनाने का संदेश दिया।

हाटपीपल्या में आयोजित नवरात्रि साधना शिविर को संबोधित को संबोधित करते डॉ. अरुण पण्ड्या

हाटपीपल्या (मध्य प्रदेश)
हाटपीपल्या में ग्यारह दिनों तक नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ व साधना शिविर आयोजित हुए। सैकड़ों साधकों ने अनुष्ठान किये, सबके कल्याणार्थ प्रार्थना की, यज्ञाहुतियाँ डालीं। समापन दिवस के मुख्य अतिथि डॉ. अरुण पण्ड्या जी ने पूज्य गुरुदेव से जुड़े मार्मिक संस्मरण सुनाते हुए श्रद्धालु एवं साधकों की युग निर्माणी आस्थाओं को बल दिया। इस अवसर पर इन्दौर के श्री महेन्द्र मोहन भट्ट, श्री जेपी यादव, देवास के श्री शिवानन्द गिरी व एसडीएम बागली जी विशेष रूप से उपस्थित थे।

नवरात्रि के दिनों में श्रद्धालुओं को तुलसी की महत्ता बतायी गयी, तुलसी के पौधे बाँटे गये। भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में उत्तीर्ण छात्र पुरस्कृत किये गये तथा कई संस्कार भी सम्पन्न हुए।

बेटियों से है गाँव की पहचान

पोटका, पू.सिंहभूम (झारखंड)
प्रखण्ड पोटका का एक गाँव तिरिंग ऐसा है जहाँ घर और परिवार उनकी बेटियों के नामों से जाने लाते हैं। उन घरों के दरवाजों पर घर की बेटियों की नाम पट्टिका (नेम प्लेट) लगी हुई है। बेटियों का आत्मबल और मान बढ़ाने वाला यह अभियान 'मेरी बेटी, मेरी पहचान' के नाम से चलाया जा रहा है। इसका नेतृत्व कर रहे हैं मुख्यमंत्री कैम्प कार्यालय में उपसमाहता सह जिला जनसूचना पदाधिकारी श्री संजय कुमार। तिरिंग बेटियों के सम्मान में ऐसा करने वाला पहला गाँव है। इसके प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए गाँव में जागरूकता रैलियाँ भी निकाली जाती हैं, जिनमें जनप्रतिनिधि और प्रशासनिक पदाधिकारी भी भाग लेते हैं।

तिरिंग 170 घरों की बस्ती वाला एक आदिवासी बहुल गाँव है, जिसमें भूमिज-मुंडा परिवार के लोग मुख्य रूप से रहते हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार इस गाँव में 1000 बेटों पर केवल 768 बेटियाँ ही हैं, जो चिंता का विषय है। गाँव ही नहीं, प्रदेश और देश में लिंगानुपात में निरंतर बढ़ते अंतर को देखते हुए श्री संजय कुमार ने यह एक प्रेरक पहल की है।
सौजन्य-श्री रामप्रताप साहू, जयपुर (ओडिशा)

> **'मेरी बेटी, मेरी पहचान' अभियान से बेटियों का मनोबल बढ़ेगा। बेटियाँ आगे बढ़ेंगी और गाँव का नाम रोशन करेंगी।**
> संजय कुमार, अभियान संयोजक

> **यह अभियान एक बेहतर पहल है। बेटियाँ किसी से कम नहीं हैं। तिरिंग में शुरू हुआ अभियान पूरे क्षेत्र में चलना चाहिए।**
> सावित्री सरदार, मुखिया जुड़ी पंचायत

अलग-अलग वर्गों को दीं आत्मोत्कर्ष की प्रेरणाएँ

बंदीगृह में यज्ञ-सत्संग

देवास (मध्य प्रदेश)
युवा प्रकोष्ठ, देवास द्वारा विजया दशमी के अवसर पर जिला जेल में गायत्री महायज्ञ एवं सत्संग का कार्यक्रम रखा गया। इसमें प्रेरणादायी प्रज्ञा गीतों एवं पूज्य गुरुदेव के विचारों के माध्यम से बन्दियों को अपने अन्दर की बुराइयों को पहचानने और उन्हें त्यागने के लिए जीवन साधना का मार्ग अपनाने की प्रेरणा दी गयी, संकल्प दिलाये गये। इस अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ के श्री विक्रम चौधरी, श्री विकास चौहान व जेलर लवसिंह कटिया ने बन्दियों का मार्गदर्शन किया।

देवास की जिला जेल में यज्ञ करते जेलर एवं बंदीगण

तमिलभाषियों के बीच व्याख्यानमाला

चेन्नई (तमिलनाडु)
चेन्नई शाखा ने नवरात्रि काल में कई कार्यक्रम आयोजित कर तमिल मूल के लोगों को जीवन साधना की ओर अग्रसर किया। कार्यक्रम बड़े सफल और प्रभावशाली थे। इनके संचालन के लिए शांतिकुंज से श्री सूरत सिंह अमृते की टोली पहुँची थी।

सुब्रमण्यम कोइल, अन्ना पिलई स्ट्रीट साहूकार पेठ में श्री अमीचंद खण्डेलवाल एवं महिला मण्डल के सहयोग से मुख्य कार्यक्रम आयोजित हुआ। यह कार्यक्रम 1 से 9 अक्टूबर तक चला जिसमें तमिल मूल के 200 से 250 लोग प्रतिदिन भाग लेते थे।

7 अक्टूबर को प्रिंस एपार्टमेण्ट में दीपयज्ञ रखा गया। 10 एवं 11 अक्टूबर को तिरुवर काडु में दीपयज्ञ हुआ। दोनों ही कार्यक्रमों में 150 से 200 तमिल भाई-बहिनों ने भाग लिया। सभी कार्यक्रमों में घर-परिवार में संस्कार संवर्धन के लिए बलिवैश्व परम्परा का अवलम्बन, वृक्षारोपण एवं देश की सुरक्षा को नुकसान पहुँचा रहे चीन के सामानों का बहिष्कार करने की प्रेरणाएँ मुख्य रूप से दी गयीं, तद्नुरूप संकल्प भी लिये गये।

वनवासियों में भक्तिभाव जगाया

घाटोल, बाँसवाड़ा (राजस्थान)
गायत्री शक्तिपीठ घाटोल में जन-जन के मन में युगशक्ति गायत्री के प्रति आस्था बढ़ाने वाले सामूहिक जप, यज्ञ के साथ गायत्री चालीसा पाठ और दुर्गा सप्तशती पाठ जैसे कई कार्यक्रम प्रतिदिन हुए। शक्तिपीठ पर हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने माता के दर्शन किये, संस्कार कराये, ज्ञान प्रसाद ग्रहण किया। दैनिक सत्संग के क्रम में नशा, कुरीतियों को छोड़ने की प्रेरणा दी जाती रही।

शक्तिपीठ पर जप के बाद आरती करते परिजन

मातृशक्ति का मान बढ़ाया

खरगोन (मध्य प्रदेश)
नवरात्रि पर्व देव शक्तियों के संगठन की साधना का पर्व है। इसी संगठित शक्ति से आज की अनाचार, दुराचार, अनीति, अन्याय जैसी सभी समस्याओं का समाधान संभव है।

> **नवरात्रि साधना में हमें देवी की पूजा ही नहीं, नारी में देवी का रूप देखने की साधना भी करनी चाहिए।**
> अमित सिंह, पुलिस अधीक्षक

उक्त विचार गायत्री शक्तिपीठ खरगोन में नवरात्रि अनुष्ठान के अंतिम दिन दुर्गा पूजन एवं शस्त्र पूजन के अवसर पर जिले के पुलिस अधीक्षक श्री अमित सिंह ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि देवी का पूजन करना तभी सार्थक है जब हम हर नारी में देवी का रूप देखें और उनके सम्मान का संकल्प लें।

गायत्री शक्तिपीठ में लगभग 400 साधकों ने प्रतिदिन प्रातः सामूहिक जप एवं गायत्री महायज्ञ संपन्न किया। 37 गर्भवती बहनों के पुंसवन, 19 बच्चों के नामकरण, 44 विद्यारंभ एवं 30 गुरु दीक्षा संस्कार संपन्न हुए। सैकड़ों लोगों ने यज्ञ की पूर्णाहुति में अपनी बुराइयों का त्याग किया । वरिष्ठ खादी ग्राम उद्योग बोर्ड के पूर्व उपाध्यक्ष श्री राय सिंह राठौर ने भी अपनी शुभकामनाएँ दीं।

इसी तरह वृक्षतीर्थ मेहरजा में भी दसों दिन पंच कुण्डीय यज्ञ हुआ, जिसमें आसपास के ग्राम मेहरजा, मगरिया, बड़गाँव, नागझिरी, खेड़ी, राजपुरा गाँव के साधकों ने भाग लिया। महाअष्टमी पर 108 कन्याओं का पूजन हुआ।

बुराइयों की आलोचना तो सभी करते हैं, लेकिन आलोचना करना उनका ही सार्थक है जो उन्हें दूर करने के लिए प्रयत्नशील भी रहते हैं।

देवात्मा हिमालय के स्वर्णिम शिखरों के सान्निध्य में कल्पनातीत हैं ध्यान, साधना की अनुभूतियाँ

गायत्री चेतना केन्द्र, मुनस्यारी में साधना शिविरों की श्रृंखला आरम्भ

मुनस्यारी, पिथौरागढ़ (उत्तराखंड)

हिमालय शिखर पर उगता हुआ सूर्य, स्वर्ण के समान, बर्फ से ढँका हुआ...

प्रातःकालीन ध्यान साधना में परम पूज्य गुरुदेव के ये निर्देश मिशन का हर कार्यकर्त्ता दोहराता है, उन्हें अपनी कल्पनाओं में साकार करने का प्रयास करता है। गायत्री परिवार के नवप्रतिष्ठित गायत्री चेतना केन्द्र, मुनस्यारी में बर्फ से ढके पंचाचूली के हिम शिखरों पर स्वर्णिम सूर्योदय और सोने जैसे पहाड़ साधकों को आह्लादित कर देते हैं। ऐसा प्रतीत होता है जैसे सविता देवता की स्वर्णिम रश्मियाँ सीधे अंतःकरण में प्रवेश कर रही हैं। ध्यान की यह अनुभूति कल्पनातीत है, इसका वर्णन शब्दातीत है।

समाचार लिखे जाने तक मुनस्यारी में अक्टूबर माह में 4 साधना शिविर सम्पन्न हुए, 93 साधकों ने इसमें भाग लिया। इनमें शांतिकुंज में पिछले वर्षों में आयोजित मौन साधना शिविरों की भाँति ही साधना एवं आहार का क्रम रहा, लेकिन विशिष्ट वातावरण में साधना की अनुभूति और उपलब्धियों साधकों को रोमांचित करने वाली हैं। कुछ साधकों के अनुभव यहाँ प्रस्तुत हैं :-

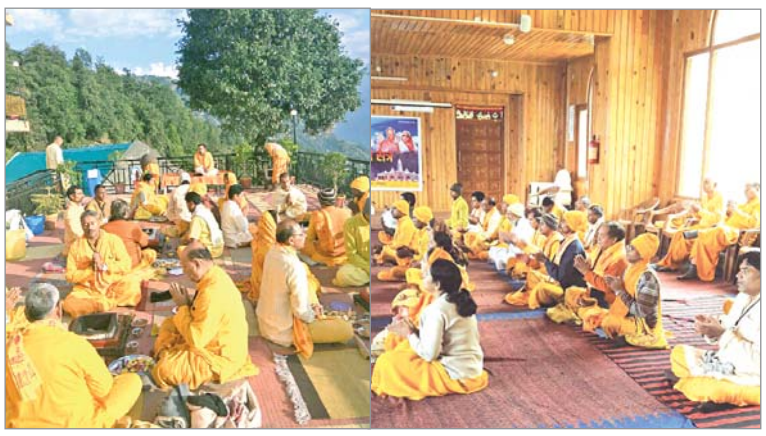

गायत्री चेतना केन्द्र, मुनस्यारी में साधकगण (बायें) यज्ञ और (दायें) सामूहिक जप, प्रार्थना करते हुए

साधकों की अनुभूतियाँ

- यहाँ का वातावरण अपने स्वरूप को समझने में बहुत सहायक है। यहाँ की गयी एकान्त साधना में जीवन के अनेक अनसुलझे प्रश्नों का समाधान अंतःकरण में अनायास ही होता दिखाई दिया।
- प.पू. गुरुदेव के साथ की जाने वाली 15 मिनट की ओंकार साधना के समय ऐसा लगा जैसे गुरुदेव प्रत्यक्ष में विराजमान हैं और उनकी ध्वनि हिमालय की चोटियों से प्रतिध्वनित होकर गूँज रही है।
- अमृतवर्षा और तीन शरीरों के ध्यान की जीवंत अनुभूतियाँ हुईं।
- दुनिया से बिलकुल दूर बर्फ से ढके हिमालय के उत्तुंग शिखरों और हरेभरे पहाड़ों के बीच यहाँ ऋषियों की सूक्ष्म चेतना का स्पंदन अनुभव होता है।
- जिंदगी की भागदौड़ से दूर ऐसे दिव्य वातावरण में हर पल प्रकृति के आनन्द को अपने अन्दर समाहित करने की उमंग उठती है। ये अनुभूतियाँ चिरस्मरणीय हैं।
- सात्विक आहार, पवित्र विचार, शुद्ध पर्यावरण और दिव्य कल्पनाओं के साथ जीवन के आनन्द की अनुभूतियाँ बड़ी विलक्षण हैं।

केन्द्रीय प्रतिनिधियों द्वारा मध्य जोन को आदर्श जोन बनाने का आह्वान

दमोह (मध्य प्रदेश)

गायत्री शक्तिपीठ दमोह पर 11 एवं 12 सितम्बर को मध्य जोन की प्रांतीय अर्धवार्षिक गोष्ठी सम्पन्न हुई। इसमें पूरे प्रांत में संगठन और शक्तिपीठों से जुड़े 600 प्रमुख कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। शांतिकुंज में जोन समन्वयक श्री कालीचरण शर्मा, मध्य जोन प्रभारी श्री विष्णु पण्ड्या और मध्य जोन के शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री जे.एस. पाराशर, श्री सुखदेव अनघोर एवं श्री महेश राठौड़ कार्यकर्त्ताओं के मार्गदर्शन के लिए इस गोष्ठी में विशेष रूप से उपस्थित रहे।

मध्य जोन की अर्धवार्षिक प्रांतीय गोष्ठी

श्री कालीचरण शर्मा जी ने गोष्ठी को संबोधित करते हुए युवा क्रान्ति वर्ष में युवा और प्रौढ़ों के संयुक्त दायित्वों के संदर्भ में मार्गदर्शन दिया। श्री विष्णु पण्ड्या जी ने मध्य जोन को एक आदर्श जोन बनाने का आह्वान किया। दो दिवसीय विचार मंथन में सप्त आन्दोलन, साहित्य विस्तार आन्दोलन, युवा जोड़ो अभियान, संगठन सशक्तीकरण एवं विस्तार, ग्रामतीर्थ साइकिल यात्रा, आदर्श ग्राम योजना, समयदानियों का चयन, त्योहारों का सामूहिक आयोजन व भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा जैसे विषयों पर मार्गदर्शन दिया गया, समूह चर्चा हुई और बड़े उत्साहवर्धक उपयोगी निष्कर्ष उभरे। प्रांतीय प्रतिवेदन श्री जोन समन्वयक श्री शिवकुमार पाण्डेय द्वारा प्रस्तुत किया गया।

दमोह की प्रांतीय गोष्ठी में मंचासीन शांतिकुंज प्रतिनिधि

शैक्षणिक संस्थाओं में कार्यशालाओं के आयोजन का कीर्तिमान

250 से अधिक शिक्षण संस्थानों में कार्यशाला आयोजित कर चुकी है दिया, छत्तीसगढ़ शाखा

दिया, छत्तीसगढ़ ने विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में कार्यशालाओं के आयोजन का शानदार कीर्तिमान स्थापित किया है। यह युवा संगठन अब तक 250 से अधिक कार्यशालाएँ आयोजित कर चुका है।

2 अक्टूबर को बीआईटी, दुर्ग के सभागार में विशाल कार्यशाला आयोजित हुई। यह शृंखला की 250वीं कार्यशाला थी। महाविद्यालय के 450 से अधिक युवाओं ने इसका लाभ लिया। दिया, छत्तीसगढ़ के प्रादेशिक संयोजक श्री पीएल साव ने उन्हें सेवा, स्वावलम्बन का पथ अपनाते हुए मनुष्य जीवन को धन्य बनाने का आह्वान किया। मुख्य अतिथि समाजसेवी डॉ. सरोज पाण्डेय ने स्वामी विवेकानन्द के पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा दी। पूर्व मंत्री श्री हेमचंद यादव ने भी उन्हें संबोधित किया।

5 अक्टूबर को शा.उ.मा. विद्यालय सिलौटी में और शा.उ.मा. विद्यालय भेण्ड्रा, जिला धमतरी में कार्यशालाएँ आयोजित की गयीं। क्रमशः 250 एवं 380 विद्यार्थियों को युग संदेश दिया गया। डॉ. साव, डॉ. योगेन्द्र कुमार, इं.सौरभकान्त ने उन्हें व्यक्तित्व परिष्कार के सूत्र सिखाये। गाँव की सरपंच श्रीमती चंद्रवती साहू का इन कार्यशालाओं के आयोजन में विशेष योगदान रहा।

भिलाई के कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय में आयोजित कार्यशाला

भिलाई (छत्तीसगढ़)

दिया, भिलाई ने 14 अक्टूबर को नगर के प्रसिद्ध कॉलेज कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय सेक्टर-7 में डिवाइन वर्कशॉप आयोजित की। विभागाध्यक्ष डॉ. जेएस तिवारी के सहयोग से जीव विज्ञान विभाग के 120 विद्यार्थियों ने इसका लाभ लिया। शिक्षक-विद्यार्थी सभी बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने महाविद्यालय के 2000 विद्यार्थियों के लिए ऐसी कार्यशाला आयोजित किये जाने की इच्छा व्यक्त की है।

डॉ. कटरे, विज्ञान विभागाध्यक्ष मुख्य अतिथि थे। डॉ. पीएल साव ने युवावर्ग के सामने वर्तमान चुनौतियाँ, डॉ. योगेन्द्र कुमार ने युवाओं के दायित्व एवं इंजीनियर युगल किशोर ने व्यक्तित्व परिष्कार विषयों पर उद्बोधन दिये।

आदि शंकराचार्य की जन्मभूमि कालडी में होगा 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ

- शांतिकुंज में पहली बार मलयालम भाषियों के लिए आयोजित हुआ संजीवनी साधना शिविर
- 7 जिलों के 130 शिविरार्थियों ने भाग लिया
- सभी ने गुरुदीक्षा एवं यज्ञोपवीत संस्कार कराये

प्रथम मलयाली शिविर में भाग लेने वाले साधकगण

गायत्री तीर्थ शांतिकुंज में 24 से 30 अक्टूबर की तारीखों में केरलवासियों के लिए विशेष सात दिवसीय संजीवनी साधना शिविर आयोजित हुआ। इसमें कालीकट, कन्नूर, पालघाट, त्रिचूर, एर्नाकुलम, इडूक्की व कोट्टयाम जिले से आये केरल के मूल निवासी 130 साधकों ने भाग लिया।

शांतिकुंज में मलयाली भाषा में आयोजित यह पहला शिविर था। प्रायः सभी प्रतिभागी पहली बार शांतिकुंज आये थे। युग निर्माण आन्दोलन के प्रति गहरी आस्था रखने वाले और दक्षिण में युगशक्ति गायत्री के प्रचार-विस्तार में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे सामाजिक कार्यकर्त्ता बेनजी थम्पी, कालीकट श्रेष्ठाचार सभा के प्रमुख एमटी विश्वनाथन, कन्नूर के डॉ. नारायण पुड्डीचेरी सहित प्रायः सभी शिविरार्थी पहली बार शांतिकुंज एवं हरिद्वार आये थे। शिविरार्थियों ने कहा कि यहाँ के लोगों के व्यवव्हार और वातावरण में हमें कभी नहीं लगा कि शांतिकुंज हमारे लिए नया स्थान है। ऐसा लगा जैसे जन्मजन्मांतरों से यहाँ से हमारा संबंध है। शंकराचार्य की धरती से आये इन सभी साधकों ने गुरुदीक्षा एवं यज्ञोपवीत संस्कार कराया।

सभी साधक आदरणीया शैल जीजी एवं आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी से प्रेम के दो शब्द सुनकर अभिभूत थे। जीजी-डॉ. साहब ने उन सबमें उत्साह और समाज के नवनिर्माण की हूक को अनुभव करते हुए आदि शंकराचार्य की जन्मभूमि कालडी में शांतिकुंज के तत्त्वावधान में अप्रैल 2017 में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ आयोजित किये जाने की घोषणा की।

शिविर संचालन दक्षिण भारत प्रकोष्ठ के प्रभारी डॉ. ब्रजमोहन गौड़ और उनके सहयोगियों ने किया। आदित्य एवं ज्योति प्रभाकरन ने शांतिकुंज के वक्ताओं के उद्बोधन का मलयालम में भाषान्तर किया। गंगादर्शन व गंगा आरती करते हुए सभी अपने को सौभाग्यशाली माना।

उज्जैन शाखा ने किया सैनिकों का सम्मान

- सेना के जवान श्री विक्रम बड़ौलिया का प्रतीक रूप में किया अभिनंदन
- शांतिकुंज प्रतिनिधियों ने भी उन्हें सेल्यूट किया

उज्जैन (मध्य प्रदेश)

प्रधानमंत्री जी द्वारा भोपाल में शौर्य स्मारक के लोकार्पण से भारतीय सैनिकों के अभिनंदन की परम्परा को बल मिला है। गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन ने भी इसका अनुसरण करते हुए शक्तिपीठ पर देश के जाँबाज सैनिकों का भावभरा सम्मान किया।

गायत्री परिवार उज्जैन ने गायत्री शक्तिपीठ पर आयोजित दशहरा मिलन समारोह में भारत के वीर जवानों को भी सलामी दी। इस अवसर पर सेना के जवान श्री विक्रम बड़ौलिया उपस्थित थे। सारी भारतीय सेना के प्रतिनिधि के रूप में उनका मंगल तिलक किया गया, अंगवस्त्र ओढ़ाया गया और सलामी दी गयी। इस अवसर पर शांतिकुंज के वरिष्ठ प्रतिनिधि डॉ. बृजमोहन गौड़, श्री विष्णु पण्ड्या, श्री महेश राठौर, स्थानीय वरिष्ठ परिजन पं. पुरूषोत्तम दुबे, श्री देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, डॉ. शशिकांत शास्त्री आदि ने भी उनका अभिनंदन किया।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धांजलि

बहराईच (उत्तर प्रदेश)

ग्राम गूढ़ मिहीपुरवा के निवासी, सेवा निवृत्त शिक्षक एवं गायत्री परिवार के नैष्ठिक कार्यकर्त्ता श्री नंदराम पाण्डेय का देहावसान हो गया। वे 66 वर्ष के थे।

राँची (झारखंड)

प्रज्ञापीठ खलारी, राँची से जुड़े वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री राघवशरण जी का 27 सितम्बर को 85 वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। वे युग निर्माण आन्दोलन के लिए समर्पित एक योग्य शिक्षक, कुशल समाजसेवी और समर्पित कार्यकर्त्ता थे।

प्रज्ञा अभियान
16 नवम्बर 2016

युग सृजेताओं में है समाज की सोच बदलने का क्रांतिकारी उत्साह

लखनऊ के प्रतिष्ठित पुस्तक मेले में भागीदारी

हर वर्ष लेखक, साहित्यकार, बुद्धिजीवियों, प्रतिष्ठित अधिकारियों, लोकसेवियों एवं समाज के सभी वर्गों को युग साहित्य का परिचय कराता है यह पुस्तक मेला

अरब से आये मेहमानों को युग साहित्य का दिग्दर्शन कराते श्री उमानंद शर्मा

लखनऊ (उत्तर प्रदेश)
गायत्री ज्ञान मन्दिर, इन्दिरा नगर, लखनऊ ने लखनऊ के मोती महल लॉन में आयोजित 10 दिवसीय पुस्तक मेले में युग साहित्य की विशाल प्रदर्शनी लगायी। 23 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक चले इस पुस्तक मेले में गुरुदेव का लिखा विपुल साहित्य प्रदर्शित किया गया, जिसमें उर्दू-अंग्रेजी भाषाओं में भी साहित्य उपलब्ध था।

पुस्तक मेले के माध्यम से नगर व प्रदेश के अनेक गणमान्यों और लाखों लोगों को युग साहित्य का परिचय कराया गया। मेला संयोजक श्री उमानन्द शर्मा और उनकी टोली ने आने वालों को साहित्य की विशेषताओं से अवगत कराने के अथक प्रयास किये।

उत्तर प्रदेश के महामहिम राज्यपाल राम नाईक, मंत्री श्री अरविन्द्र सिंह गोप, प्रो. अभिषेक मिश्रा, लखनऊ के जिलाधिकारी श्री सत्येन्द्र यादव, पूर्व मण्डलायुक्त श्री आर.के. मित्तल, महापौर श्री दिनेश शर्मा सहित विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादक-संवाददाता, लेखक, चिंतक, बुद्धिजीवी गायत्री परिवार के पटल पर आये, युग साहित्य का अवलोकन किया और बड़ी श्रद्धा के साथ परम पूज्य गुरुदेव को नमन करते हुए उनका ज्ञान प्रसाद साथ लेकर गये।

मुस्लिम विश्वविद्यालय, नदवा, लखनऊ में अध्ययनरत अरब देश के छात्रों ने भी युग साहित्य का अवलोकन किया। लखनऊ के जिलाधिकारी श्री राजशेखर ने 26वें पुस्तक मेले के समापन अवसर पर श्री उमानन्द शर्मा को ज्ञानयज्ञ के प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया।

2 माह में घर-घर जाकर लगाये 11000 स्टिकर

सर्वाधिक उत्साहजनक यह है कि लोगों ने इस अभियान में बढ़चढ़कर सहयोग किया, अपनी ओर से स्टिकर लगवाये।

अशोक नगर, गुना (मध्य प्रदेश)
युवाक्रांति वर्ष-2016 में गायत्री शक्तिपीठ अशोक नगर के परिव्राजक श्री प्रेमनारायण मीणा ने परम पूज्य गुरुदेव के क्रांतिकारी विचारों को घर-घर पहुँचा देने का बीड़ा उठाया। उन्होंने घर-घर जाकर 11000 स्टिकर लगाने का संकल्प लिया और उसे दो माह में ही सफलता पूर्वक पूरा भी कर दिखाया। वे बिना किसी धर्म, जाति, वर्ग की परवाह किये हर घर, दुकान, कार्यालय और सार्वजनिक स्थानों पर गये, वहाँ परम पूज्य गुरुदेव के विचारों वाले स्टिकर लगाये।

सर्वाधिक उत्साहजनक यह है कि लोगों ने इस अभियान में उनका बढ़चढ़कर सहयोग दिया। सेवाभावी महामनाओं ने उन्हें स्टिकर खरीदने के लिए अनुदान दिया। इस कार्य में नगरपालिका अध्यक्ष डॉ. हरवीर सिंह रघुवंशी, डॉ. जयमण्डल सिंह यादव, गायत्री कोचिंग सेण्टर के श्री ओमप्रकाश, एडवोकेट सुरेश गोस्वामी, श्री जेएल यादव, श्री गुलाटी, श्री चिमन सालूजा, श्रीमती मधु शर्मा, श्री पालीवाल एवं गायत्री परिवार शढौरा के परिजनों का प्रशंसनीय सहयोग मिला।

परिव्राजक प्रेमनारायण जी के अभियान का लक्ष्य पूरी तरह समाज सुधार ही रहा। उन्होंने स्टिकर लगाने के साथ लोगों को वृक्षारोपण, नशात्याग, स्वच्छता, कुरीति उन्मूलन और संस्कार परम्परा के अवलम्बन जैसे कार्यों की प्रेरणा दी और उल्लेखनीय सफलता पायी।

एक गृहणी ने बदल दी सैकड़ों गरीब बच्चों की किस्मत

जमशेदपुर (झारखंड)
एक सामान्य गृहणी श्रीमती अनामिका मजूमदार की जाग्रत संवेदना सामाजिक परिवर्तन के पक्षधर लोगों के लिए प्रेरक और प्रदर्शक सिद्ध हो सकती है। अपने घर के पास के मैदान में खेलते गरीब बच्चों की दुर्दशा को देखकर जब अनामिका ने उन्हें सही राह दिखाने की ठानी तो यह कार्य उनका जुनून ही बन गया।

श्रीमती अनामिका ने तीन साल पहले बर्मामाइंस में 10 बच्चे-बच्चियों को नृत्य-नाटक सिखाना आरंभ किया था। आज वे 100 से ज्यादा बच्चियों और किशोरियों को डांस-ड्रामा की ट्रेनिंग दे रही हैं। उनके सिखाये बच्चों ने कई राज्यों में कार्यक्रम दिये और कई पुरस्कार जीते हैं।

गली, मैदानों में भटकने वाले गरीब परिवार के बच्चे अक्सर नशा, आवारागर्दी जैसी बुरी आदतों में आसानी से फँस जाते हैं। श्रीमती अनामिका जी ने ऐसे बच्चों को अच्छे कार्यों में लगाने और उनके समय का सदुपयोग करने का निश्चय किया। परिणाम अत्यंत उत्साहजनक रहे। वे इन दिनों डांस, ड्रामा के अलावा बच्चों को स्वास्थ्य, स्वच्छता, व्यावसायिक शिक्षा, कम्प्यूटर शिक्षा आदि भी प्रदान कर रही हैं।

- **घर के पास मैदान में खेलते गरीब बच्चों की बदहाली देखकर द्रवित हो गयी श्रीमती अनामिका मजूमदार**
- **उन्होंने उन बच्चों को नृत्य, नाटक की शिक्षा दी, जो कई राज्यों में कार्यक्रम प्रस्तुत कर चुके हैं और कई पुरस्कार जीते हैं।**
- **अब वे जरूरतमंद बच्चों को कम्प्यूटर और व्यावसायिक शिक्षा भी दे रही हैं।**

सौजन्य-श्री रामप्रताप साहू, जयपुर (ओडिशा)
प्रभात खबर 21 अगस्त 2016

बच्चों को व्यसनों से बचाने की ठान चुके हैं चंपकभाई

- **40 से अधिक स्कूलों में प्रेजेण्टेशन दिया है**
- **मोबाइल, वीडियो गेम जैसे व्यसनों से बचने की प्रेरणा भी बच्चों को देते हैं**
- **संखेड़ा और बोडेली तहसील के हर स्कूल में संदेश पहुँचाना है पहला लक्ष्य**

वडोदरा (गुजरात)
वर्ष 2014 में विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट पढ़ी। लिखा था कि प्रायः 8वीं से लेकर 12वीं तक की कक्षाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थी जीवन में सही दिशा से भटकते और तरह-तरह के व्यसनों में फँसते हैं। इसे पढ़ने के बाद परम पूज्य गुरुदेव के युग निर्माण आन्दोलन के लिए समर्पित श्री चंपकभाई ने इस उम्र के विद्यार्थियों को सही दिशा देना एवं उन्हें भटकावों से बचाना ही अपनी सक्रियता का प्रमुख विषय बना लिया।

श्री चंपकभाई तब से स्कूल, कॉलेजों में जाते हैं। वहाँ विद्यार्थियों की सामूहिक सभा को संबोधित करते हैं। एक घंटे की कक्षा में वे बच्चों को केवल गुटखा, तंबाकू, बीड़ी, सिगरेट से ही नहीं, बल्कि उनका समय बरबाद करने वाले मोबाइल, वीडियो गेम, फेसबुक जैसी लतों से बचने का संदेश भी देते हैं। अब तक वे 40 से अधिक स्कूलों में इस प्रकार के कार्यक्रम देकर हजारों बच्चों के प्रेरणा स्रोत बन चुके हैं।

अखिल विश्व गायत्री परिवार शाखा वडोदरा के बैनर तले पावर पॉइण्ट के माध्यम से दी जाने वाली श्री चंपकभाई की प्रेरणाएँ बड़ी प्रभावशाली होती हैं। वे बताते हैं कि गाँव का एक व्यक्ति न्यूनतम 10 रु. भी अपने व्यसनों पर खर्च करते हैं तो उससे उनकी भविष्य की शिक्षा, पारिवारिक स्थिति, गाँव की सड़कों, बिजली, पानी की व्यवस्था में कितना बड़ा सुधार हो सकता है। इस नासमझी को बच्चे अभी से समझें, व्यसनों से बचें।

श्री चंपकभाई बच्चों को बताते हैं कि एक मीठी सुपारी भी उन्हें कैसे नशे के जाल में फँसा लेती है। वे पढ़ाई के दबाव व परीक्षा के तनाव से बचने का उपाय बताते हैं। गायत्री साधना से कैसे व्यक्तित्व सँवरता है, यह भी समझाते हैं। बच्चों को नशों से बचने का संकल्प दिलाते हैं।

स्कूल प्रबंधन द्वारा ऐसे कार्यक्रमों को खूब पसंद किया जा रहा है। वे उनके प्रेजेण्टेशन अपने पास रखते हैं, ताकि बच्चों को इनके माध्यम से बार-बार प्रेरणा दी जा सके।

चंपकभाई का पहला लक्ष्य वडोदरा जिले की दो तहसील बोडेली एवं संखेड़ा के हर विद्यालय तक पहुँचना और बच्चों को सावधान करना है।

समाज और संस्कृति के उत्थान के लिए समर्पित शिक्षक-विद्यार्थियों का सम्मान

हिमाचल प्रदेश का प्रांतीय पुरस्कार वितरण समारोह

शिमला (हिमाचल प्रदेश)
गतवर्ष हिमाचल प्रदेश में आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का प्रांतीय पुरस्कार वितरण समारोह 8 अक्टूबर को बचत भवन, शिमला में आयोजित हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत इस अवसर पर प्रांतीय वरीयता प्राप्त छात्रों को सम्मानित किया।

महामहिम आचार्य देवव्रत जी ने अपने आशीर्वचन में कहा कि आचार्य श्रीराम शर्मा को मैंने बहुत पढ़ा है। वे गायत्री परिवार के ही नहीं, पूरी मानवता के लिए महान पथ प्रदर्शक हैं। उन्होंने सरल उदाहरणों के साथ विचारों की सामर्थ्य समझायी और कहा कि विचार क्रांति से ही अच्छे इंसानों का निर्माण संभव है। बच्चों को देश की नींव और भविष्य बताते हुए उन्हें सद्विचारों के साँचे में ढालने का आह्वान अध्यापकों से किया।

- **सारी दुनिया के लिए पथ प्रदर्शक हैं पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी के विचार**
  महामहिम आचार्य देवव्रत, राज्यपाल हि.प्र.

आरंभ में हिमाचल प्रदेश के प्रांतीय संयोजक श्री वीके भटनागर एवं श्री गिरजानन्द शर्मा ने महामहिम का गायत्री मंत्र चादर ओढ़ाकर व पुष्पार्पण कर स्वागत किया। श्री भटनागर ने बच्चों में गुरुजनों के प्रति सम्मान का भाव बढ़ाने और भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का व्यापक विस्तार करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

श्री जयराम शर्मा ने भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के संदर्भ में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि गतवर्ष हिमाचल प्रदेश के 65 हजार विद्यार्थी इस परीक्षा में शामिल हुए थे। इसे हर विद्यालय तक पहुँचाकर समाज और संस्कृति की सेवा करने का अनुरोध भी उन्होंने किया। पुरस्कार वितरण समारोह में 60 विद्यार्थी एवं 150 अध्यापकों ने भाग लिया। शिमला जिले के वरीयता प्राप्त विद्यार्थियों को भी इसी समारोह में सम्मानित किया गया।

181 प्रधानाचार्य, शिक्षकों का सम्मान

बदायूँ (उत्तर प्रदेश)
प्रज्ञा मण्डल बदायूँ द्वारा शिक्षक दिवस के अवसर पर भद्वार गर्ल इण्टर कॉलेज, उझानी में शिक्षक गरिमा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इसमें जिले के 181 प्रधानाचार्यों, शिक्षक-शिक्षिकाओं तथा राष्ट्रपति सम्मान पाने वाले शिक्षकों को 'सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन्' सम्मान से विभूषित किया गया। राष्ट्रपति शिक्षक सम्मान प्राप्त सभी शिक्षकों को सम्मान पत्र प्रदान किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि बाँके बिहारी कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. वीके शर्मा ने शिक्षकों के श्रेष्ठ चिन्तन को राष्ट्र को बुलन्दियों तक पहुँचाने का आधार बताया। कार्यक्रम के अध्यक्ष पूर्व प्राचार्य डॉ. डीएस त्यागी ने कहा कि शिक्षकों द्वारा किये गये तप से ही छात्रों का उत्कर्ष होता है। विशिष्ट अतिथि सुभाष चन्द्र जी ने शिक्षकों के मार्गदर्शन में अपनी प्रतिभा निखारने की युवाओं से अपील की।

इसके अलावा बाबुराम सिंह भायसिंह डिग्री कॉलेज बाबराला के प्राचार्य डॉ. मघेन्द्रपाल सिंह, पर्यावरणविद डॉ. शैलेन्द्र कबीर, शक्तिपीठ के अनिल प्रकाश गुप्ता, रामप्रकाश शर्मा एवं प्रधानाचार्य वाईके सिंह ने भी सभा को सम्बोधित किया।

गायत्री परिवार के प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री बी. ज्ञानेन्द्र, श्री संजीव कुमार शर्मा ने गायत्री परिवार द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में देवत्व के उभार के लिए चलाये जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी दी और सभी से उनमें सहयोग प्रदान करने का आह्वान किया। मंच संचालिन डॉ. सन्तोष गुप्ता ने किया।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में आयोजित हुई विचार गोष्ठियाँ एवं कार्यशालाएँ

गौ माता और गाँवों में उत्कर्ष के लिए आयोजित हुई सेमिनार

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के ग्राम प्रबंधन विभाग द्वारा 17 अक्टूबर को 'देसी गाय नस्ल सुधार एवं जैविक खेती की आवश्यकता व ग्रामीण अर्थ व्यवस्था' विषय पर एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन हुआ। इसमें भाग ले रहे वैज्ञानिक श्वेत क्रांति व हरित क्रांति होने के बाद भी आज के किसानों की दयनीय अवस्था पर चिंतित थे। देसंविवि की ओर से ग्राम प्रबंधन संकाय के प्रमुख वक्ता डॉ. टीसी शर्मा, डॉ. करन सिंह, डॉ. केएन दुबे, डॉ आरजी शर्मा एवं डॉ एसके पाण्डेय ने परिचर्चा में भाग लिया। इस अवसर पर भारतीय पशु चिकित्सा शोध संस्थान बरेली के निदेशक डॉ. आरके सिंह, नेशनल एकेडमी ऑफ एग्रीकल्चर साइन्सेस के सचिव डॉ. एमपी यादव, गोविन्द बल्लभ पंत विश्वविद्यालय रुद्रपुर के पूर्व डीन डॉ. रामजीत शर्मा एवं सेण्ट्रल बफैलो रिसर्च इन्स्टीट्यूट के निदेशक डॉ. एनएन पाठक आदि ने अपने-अपने शोध परक विचार प्रस्तुत किये।

"क्रॉस ब्रीडिंग के परिणाम से गायें दूध तो अधिक दे रही हैं, किन्तु बीमार भी अधिक हो रही हैं।

"देशी गाय की नस्ल सुधार में ही उज्ज्वल भविष्य निहित है।

देसंविवि के कुलपति श्री शरद पारधी जी ने सेमीनार का उद्घाटन करते हुए कृषि एवं ग्राम विकास को 21 वीं सदी में प्रगति का मूल मंत्र बताया।

वैज्ञानिकों ने कहा कि **क्रॉस ब्रीडिंग के परिणाम से गायें दूध तो अधिक दे रही हैं, किन्तु वे बीमार भी जल्दी हो रही हैं।** विश्व व्यापार संगठन व वर्ल्ड आर्गेनाइजेशन फॉर एनीमल हेल्थ जैसी अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के मानक इन बीमारियों के कारण निर्यात में बाधक बन रहे हैं। विदेशी नस्लों की गायों के रख-रखाव पर आय की तुलना में खर्च अधिक हो रहा है।

देशी गाय की नस्ल सुधार में ही किसानों का उज्ज्वल भविष्य निहित है। इससे स्वास्थ्य, कृषि, ज़मीन की ऊर्वरता में क्रांतिकारी परिवर्तन लाये जा सकते हैं, जो समाज की समृद्धि सुनिश्चित करेंगे।

सेमिनार में भाग ले रहे विशेषज्ञ, वैज्ञानिक; इंसेट में दो मुख्य वक्ता श्री शरद पारधी व डॉ. आरके सिंह

सामाजिक एकता एवं प्रगति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं धर्म शिक्षक - कर्नल राणा

कर्नल एचएस राणा और सूबेदार डॉ. पाण्डेय ने 'धर्मविज्ञान' संकाय के विद्यार्थियों से सेना से जुड़कर देश की सेवा करने और अपना भविष्य सँवारने की प्रेरणा दी।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के धर्मविज्ञान विभाग द्वारा 'भारतीय थलसेना में धर्म विज्ञान की भूमिका' पर कार्यशाला आयोजित की गयी।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कर्नल एचएस राणा ने कहा कि सेना केवल देश की रक्षा ही नहीं करती, वरन कई प्रकार के रचनात्मक कार्य भी करती है। उन्होने बताया कि बद्रीनाथ में 11 हजार से 12 हजार फीट की ऊचाई पर भी 35 लाख पेड उनकी यूनिट की ही देन है। इस दृष्टि से धर्म शिक्षकों की सेना में प्रेरणा-प्रोत्साहन की दृष्टि से बहुत उपयोगिता है। कर्नल राणा ने विद्यार्थियों को सेना में धर्म शिक्षकों के चयन की प्रक्रिया भी समझायी।

श्री शरद पारधी जी कर्नल राणा को वाङ्मय भेंट करते हुए

कुलपति श्री शरद पारधी ने कहा कि सफलता वहीं है जहाँ प्रयास है। उन्होंने सेना में अफसर रेंक पर भी धर्म-विज्ञान के विद्यार्थियों के चयन की संभावनाओं की चर्चा की। सूबेदार डॉ. वीके पाण्डेय ने बताया कि इण्टर के बाद देसंविवि से धर्म विज्ञान पाठ्यक्रम में डिप्लोमा प्राप्त विद्यार्थी सेना में अपना भविष्य सँवार सकते हैं।

धर्म विज्ञान विभाग के समन्वयक श्री दुर्गेश चन्द्र द्विवेदी ने विभिन्न क्षेत्रों में धर्म शिक्षकों की आवश्यकताओं पर प्रकाश डाला। देसंविवि के सुरक्षा अधिकारी कर्नल उदय मिश्रा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

जीवन एक संगीत है, जिसमें स्थिरता का निरंतर अभ्यास जरूरी है - डॉ. चिन्मय पण्ड्या

संगीत कार्यशाला

देसंविवि में संगीत विभाग द्वारा दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गयी। इसमें शरीर एवं मनोरोगों पर संगीत का प्रभाव दिखाने के वाले विविध प्रयोग किये गये। संगीत घराना, गायन शैली व गुरु-शिष्य परम्परा संबंधी जानकारियाँ विशेषज्ञों द्वारा दी गयीं।

कार्यक्रम का आरंभ कुलपति श्री शरद पारधी एवं प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्डया द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ। श्री शरद पारधी जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि संगीत का मन एवं शरीर पर गहरा प्रभाव पड़ता है, उन्हें ऊर्जावान बनाता है।

डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि जीवन एक संगीत है। इसमें मधुरिमा बनी रहे इसके लिए स्थिरता एवं अभ्यास की नितांत आवश्यकता होती है। उन्होंने संगीत के अनेक आध्यात्मिक आयामों की चर्चा की।

संगीत मर्मज्ञ डॉ. पी.सी. कुशवाहा विभागाध्यक्ष श्री चित्रगुप्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय मैनपुरी, डॉ. गीता जोशी विभागाध्यक्ष सतीकुण्ड महिला महाविद्यालय एवं सहारनपुर से पधारी नृत्यांगना आचार्य प्रतिष्ठा कार्यशाला के गणमान्य अतिथि थे। श्री कुशवाहा ने संगीत के स्वर, ताल के प्रभाव की वैज्ञानिकता संबंधी महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ दीं। डॉ. गीता जोशी ने जीवन में संगीत की महत्ता पर प्रकाश डाला। आचार्य प्रतिष्ठा ने मनमोहक नृत्य प्रस्तुति के साथ गायन, वादन एवं नृत्य के समन्वय से पूर्णता प्राप्ति के संदर्भ में मार्गदर्शन किया।

कार्यक्रम समापन पर संगीत विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. शिवनरायण प्रसाद ने संगीत की बारीकियाँ समझाते हुए संगीत से जीवन में सरसता बढ़ाने, ईश्वर का सामीप्य प्राप्त करने की प्रेरणा विद्यार्थियों को दी।

प्रथम दिन शिक्षकों की भजन संध्या का आयोजन हुआ। प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी सहित समस्त विभागों के आचार्यों ने प्रज्ञागीत, भजन आदि गाये। अत्यंत आह्लादकारी वातावरण में श्रोताओं का मन श्रद्धा, संवेदना, समर्पण और प्रेमभाव से सराबोर हो गया। लगभग 150 आचार्य-विद्यार्थियों ने इस कार्यशाला में भाग लिया।

कार्यशाला में गीत-संगीत प्रस्तुत करते आचार्य वृंद, डॉ. पीसी कुशवाहा एवं डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में आयोजित हो रहा है चिकित्सा शिविर

दिनांक : 18 से 25 दिसम्बर 2016

ऋषियुग्म परम पूज्य गुरुदेव-परम वन्दनीया माताजी द्वारा चलाये जा रहे समग्र स्वास्थ्य आन्दोलन को गति देने एवं 'स्वस्थ शरीर-स्वच्छ मन-सभ्य समाज' की सतयुगी परिकल्पना को चतुर्दिक साकार करने करने हेतु गायत्री तीर्थ-शान्तिकुञ्ज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता सर्वविदित है।

मधुमेह
कब्ज
अपच
एसिडिटी

इस क्रम में देव संस्कृति विश्वविद्यालय में योग एवं स्वास्थ्य विभाग के पूरक एवं वैकल्पिक चिकित्सा केन्द्र (Center of Complementary & Alternative Medicine School of Yoga & Health) के तत्त्वावधान में डायबिटिज, कब्ज, अपच एवं एसीडिटी से सम्बन्धित रोगों के निदान हेतु दिनांक 18 से 25 दिसम्बर 2016 की तिथियों में सात दिवसीय चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

- इस शिविर में अधिकतम 80 मरीजों को ही लिया जायेगा। प्रति मरीज पंजीयन शुल्क ₹7500/- निर्धारित है, जिसमें भोजन, आवास एवं उपचार सुविधा शामिल है।
- प्राकृतिक चिकित्सा शिविर की सुविधा केवल 20 महिला और 20 पुरुषों को (कुल 40) ही दी जा सकेगी। इसके लिए ₹2100/- अतिरिक्त शुल्क देना होगा। अतिरिक्त शुल्क सहित जो पहले आवेदन करेंगे, उन्हें ही यह चिकित्सा दी जा सकेगी।
- आरंभ में ₹1500/- जमा कराकर अपना स्थान आरक्षित करवाया जा सकता है। शेष राशि यहाँ आने पर दी जा सकती है।
- पंजीयन हो जाने के बाद शुल्क वापसी किसी भी स्थिति में नहीं होगी।
- मरीज की आयु सीमा न्यूनतम 18 वर्ष तथा अधिकतम 65 वर्ष हो।
- चिकित्सा शिविर में उपचारार्थ अकेले ही आएँ। अशक्त, अपाहिज एवं असमर्थ व्यक्ति न आएँ।
- पंजीयन की अंतिम तिथि 10 दिसम्बर 2016 है। (यदि निर्धारित तिथि से पूर्व निर्धारित संख्या में मरीजों का पंजीयन हो जाता है तो निर्धारित अंतिम तिथि से पहले ही पंजीयन बंद कर दिया जायेगा।)
- पासपोर्ट साइज के दो फोटो व मूल पहचान पत्र अवश्य लायें।
- पंजीयन ऑनलाइन (www.dsvv.ac.in) तथा ऑफलाइन (डी.डी.-देव संस्कृति विश्वविद्यालय के नाम) किया जा सकता है।
- **सम्पर्क सूत्र :** योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा शिविर, पूरक एवं वैकल्पिक चिकित्सा केन्द्र (योग एवं स्वास्थ्य विभाग), देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-249411

मोबाइल नं.: 9258360555, 9258369512, 9258360967

राज्य स्तरीय कुश्ती प्रतियोगिता

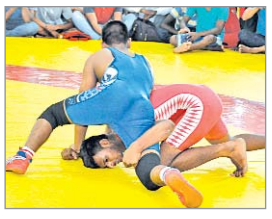

उत्तराखण्ड कुश्ती संघ की ओर से देव संस्कृति विश्वविद्यालय में दो दिवसीय राज्य स्तरीय कुश्ती प्रतियोगिता आयोजित की गयी। महिला व पुरुषों के सीनियर, जूनियर व सब जूनियर वर्गों में आयोजित प्रतियोगिता में हरिद्वार, देहरादून, पौड़ी गढ़वाल, अल्मोड़ा, उधमसिंह नगर एवं उत्तराखंड पुलिस के 42 खिलाड़ियों ने भाग लिया।

कुलपति श्री शरद पारधी ने प्रतियोगिता का उद्घाटन करते हुए खिलाड़ियों को खेल भावना बनाये रखने के संकल्प दिलाये। उन्होंने विद्यार्थियों को हार-जीत से ज्यादा कौशल निखारने पर ध्यान केन्द्रित करने की प्रेरणा दी।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि राज्य के परिवहन मंत्री माननीय नवप्रभात जी थे। खिलाड़ियों के उत्साह और कौशल का अभिनंदन करते हुए उन्होंने कहा कि उत्तराखंड अब खेलों में भी प्रगति कर रहा है। उन्होंने खेलों के विकास में देसंविवि के योगदान की विशेष तौर पर सराहना की।

इस अवसर पर कुलसचिव संदीप कुमार, कुश्ती संघ के सचिव वीडी सिंह, कार्यवाहक सचिव वीपी गुरुवंत, वरिष्ठ पदाधिकारी उमेश जोशी, स्पोर्ट सोसाइटी ऑफ इंडिया के कोच प्रदीप शर्मा आदि उपस्थित थे।

अंतर्राज्यीय योग प्रतियोगिताएँ

देसंविवि के विद्यार्थियों ने उत्तराखंड का प्रतिनिधित्व करते हुए बिहार, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ व पंजाब में जीते पदक

देसंविवि के विद्यार्थियों ने अपने प्रदेश उत्तराखंड का प्रतिनिधित्व करते हुए विगत दिनों कई अंतर्राज्यीय योग प्रतियोगिताओं में भाग लिया। उन्होंने कई पदक जीतकर न केवल अपने विश्वविद्यालय, अपितु प्रदेश का भी गौरव बढ़ाया।

पटना में योगा फेडरेशन ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित चैम्पियनशिप में स्मिता कुमारी ने स्वर्ण एवं भारती मिश्रा, अमृता कुमारी व राजेश चैधरी ने रजत पदक प्राप्त किये। ग्वालियर में आयोजित स्टेट चैम्पियनशिप में पुष्पराज ने रजत पदक एवं ज्ञानेश्वर कुमार ने कांस्य पदक प्राप्त किया। छत्तीसगढ के कोरबा में आयोजित चैम्पियनशिप में वर्षा शर्मा एवं सुरेन्द्र पटेल ने स्वर्ण तथा धीरज कुमार ने कांस्य पदक प्राप्त किया। पंजाब के पटियाला में दिलराज ने स्वर्ण पदक प्राप्त किया गया।

प्रज्ञा अभियान
16 नवम्बर 2016

पंच पर्वों ने स्वास्थ्य, समृद्धि, गौ और गाँवों के विकास के प्रति जागरूकता बढ़ायी

ज्योति पर्व पर श्रेष्ठ परम्परा और सद्भावों के दीप जलाये

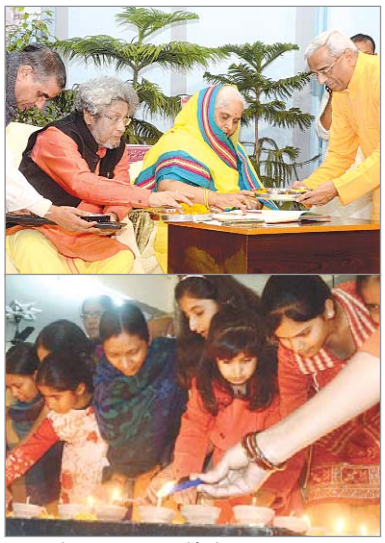

ऊपर बही-खाता पूजन एवं नीचे दीप प्रज्वलन

शांतिकुंज के सत्संग भवन में सायंकाल दीपावली पूजन का मुख्य कार्यक्रम आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं आदरणीया जीजी की गरिमामय उपस्थिति में आयोजित हुआ। उन्होंने सबसे पहले राष्ट्रोत्थान के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले त्यागी, तपस्वी, साहसी लोगों के नाम प्रथम दीप प्रज्वलित किया।

आदरणीय डॉ. साहब ने अपने संदेश में दीपावली की प्रेरणाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि दीपावली आर्थिक बजट बनाने का महापर्व है। यह एक विशेष यज्ञ है, जिसमें अपने धन का सुनियोजन करने का संकल्प लिया जाता है। इसी संकल्प के साथ उन्होंने शांतिकुंज के लेखा विभाग प्रभारी श्री हरीश ठक्कर के सहयोग से बही खाता और कम्प्यूटर व उसके माउस का पूजन किया। पटाखे न चलाकर प्रदूषण से बचाने और विद्युत झालरों से सजावट की जगह दीपमालाओं से दीवाली मनाने का संदेश भी उन्होंने दिया। पर्व पूजन का कर्मकाण्ड श्री श्याम बिहारी दुबे और युगगायकों ने सम्पन्न कराया।

शौर्य का सम्मान : अदम्य साहस के साथ राष्ट्र की रक्षा कर रहे सैनिकों के सम्मान में दीप प्रज्वलन के लिए विशेष व्यवस्था की गयी थी। सभी ने वहाँ दीप जलाते हुए बड़े गौरव की अनुभूति की।

बल्बावली नहीं, दीपावली : घर-घर मिट्टी के दीप जलाये गये, चीन से आयातित विद्युत झालरों से पूरी तरह परहेज किया गया।

जनजागरूकता रैली : दीपावली से एक दिन पूर्व गायत्री विद्यापीठ के विद्यार्थियों और एक मासीय सत्र के शिविरार्थियों ने जनजागरूकता रैली निकाली। लोगों ने पटाखों से परहेज कर प्रदूषण न बढ़ाने एवं राष्ट्र की सुरक्षा व स्वाभिमान के लिए खतरा बन रहे चीन से आयातित वस्तुओं का बहिष्कार करने के संकल्प लिये।

वृक्ष लगाये, पटाखे नहीं जलाये : देसंविवि के छात्रों और शांतिकुंज के बच्चों ने लिये गये संकल्पों का तत्परता से पालन किया, पटाखे नहीं चलाये, अपितु वृक्षारोपण किया।

रंगोली से सजाया शांतिकुंज : शांतिकुंज की बहिनों ने पूरे शांतिकुंज परिसर को रंगोली से सजाया था।

चेतना दिवस (रूप चतुर्दशी)

राष्ट्रोत्थान के लिए समर्पित युवाओं की विशाल वाहिनी तैयार करना चाहते हैं मान. डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

बायें-जन्म दिवस पर दीप जलाते कुलाधिपति जी, दायें- विश्वविद्यालय परिवार द्वारा किया गया अभिनंदन

हर वर्ष रूप चतुर्दशी के दिन अखिल विश्व गायत्री परिवार के नायक एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति माननीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का जन्म दिवस 'चेतना दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष उनका 67वाँ जन्म दिवस शांतिकुंज और देव संस्कृति विश्वविद्यालय में बड़ी सादगी के साथ मनाया गया। दोनों ही स्थानों पर उन्हें आत्मीय जनों और शिक्षक, विद्यार्थियों ने अपने हृदय के भाव तरह-तरह से व्यक्त करते हुए उन्हें शुभकामनाएँ प्रदान कीं।

सायंकाल मृत्युंजय सभागार में दीपयज्ञ के साथ कुलाधिपति जी का जन्म दिवस मनाया गया। इस अवसर पर कुलपति, प्रतिकुलपति, कुलसचिव ने एक मनमोहक गुलदस्ता एवं उनके सम्मान में लिखी गयी कविता भेंट कर उनका अभिनंदन किया। शिक्षक, विद्यार्थियों ने गीत-संगीत के माध्यम से अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त कीं। आदरणीय डॉ. साहब के उदात्त व्यक्तित्व, युवा उत्कर्ष, सामाजिक नवोन्मेष के लिए उनके द्वारा किये गये कार्यों की झलकियाँ दर्शाती एक डॉक्यूमेण्ट्री प्रस्तुत की गयी।

आदरणीय डॉ. साहब ने अपने आशीर्वचन में जीवन के भावी लक्ष्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वे युग निर्माण आन्दोलन को उसके लक्ष्य तक पहुँचाने वाली मानवीय संवेदनाओं से ओतप्रोत, राष्ट्र के उत्थान के समर्पित विशाल युवा वाहिनी तैयार करना चाहते हैं।

अपने जन्म दिवस के उपलक्ष्य में आदरणीय डॉ. साहब ने देवदारु और गरुड़ के पौधे भी रोपे।

इससे पूर्व प्रातःकाल शांतिकुंज में सैकड़ों आत्मीयजनों ने आदरणीय साहब को गुलदस्ते, कवितायें, चित्र आदि भेंट करते हुए उनके माध्यम से अपने हृदयोद्गार व्यक्त किये।

जीवन और प्रकृति के बीच संतुलन से मिलता है समग्र स्वास्थ्य

जीवन का पहला सुख है निरोगी काया। परमात्मा ने हमें मनुष्य जीवन का दिव्य उपहार तो दिया ही है, उसे स्वस्थ, सबल बनाये रखने के लिए प्रकृति का अनुदान भी दिया है। यह विडंबना ही है कि हम उपेक्षा और अज्ञानवश दोनों का महत्त्व ठीक से नहीं समझते। वस्तुतः तरह-तरह के रोग जीवन और प्रकृति के बीच असंतुलन का ही परिणाम होते हैं। भगवान धन्वन्तरि ने वृक्ष-वनस्पति व प्रकृति के रहस्यों का उद्घाटन कर मनुष्य को स्वस्थ रहना सिखाया। मानवता पर उनका यह महान उपकार है।

देसंविवि स्थित फार्मेसी में यज्ञ करते चिकित्सक एवं सहयोगी

यह विचार शांतिकुंज में 28 अक्टूबर को मनाये गये धन्वन्तरि जयंती (धन तेरस) समारोह में शांतिकुंज चिकित्सालय एवं फार्मेसी में सेवाएँ प्रदान कर रहे चिकित्सकों ने व्यक्त किये। इस मंच से डॉ. एके दत्ता, डॉ. ओपी शर्मा, डॉ. गायत्री शर्मा, डॉ. मंजू चोपदार, डॉ. वन्दना श्रीवास्तव, डॉ. अलका मिश्रा आदि ने सभा को संबोधित करते हुए भगवान धन्वन्तरि को शांतिकुंज परिवार की ओर से भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित की।

भगवान धन्वन्तरि की प्रतिमा का विधि-विधान के साथ पूजन हुआ। विभिन्न वक्ताओं ने स्वस्थ्य जीवन के अनेकानेक उपयोगी सूत्र दिये। उन्होंने संतुलित आहार-विहार, प्रकृति के सम्यक सेवन, वनौषधियों के उपयोग, योग, यज्ञ आदि के माध्यम से स्वस्थ रहते हुए जीवन का भरपूर आनन्द लेने के सूत्र बताये।

शांतिकुंज फार्मेसी में हुआ यज्ञ

धन्वन्तरि जयंती के उपलक्ष्य में देव संस्कृति विश्वविद्यालय में विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। स्वास्थ्य संकाय से जुड़े सभी चिकित्सक एवं उनके सहयोगियों ने बड़ी श्रद्धा और विशेष हवन सामग्री के साथ विशेष आहुतियों अपने इष्टदेव को समर्पित कीं।

डॉ. प्रणव जी ने फहराया 100 फीट ऊँचा राष्ट्रध्वज

पूरे उत्तराखंड और देश में तिरंगे का मान बढ़ाने का संकल्प लिया

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ध्वजारोहरण करते हुए

- दिव्य प्रेम सेवा मिशन ने हरिद्वार में की स्थापना
- केन्द्रीय राज्यमंत्री, सांसद, विधायक भी उपस्थित रहे

23 अक्टूबर को हरिद्वार के चण्डी घाट स्थित दिव्य प्रेम सेवा मिशन द्वारा 100 फीट ऊँचे तिरंगे ध्वज की स्थापना की गयी। आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने ध्वजारोहण समारोह की अध्यक्षता की। उन्होंने विद्युत बटन दबाकर प्रथम ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर केन्द्रीय राज्यमंत्री श्री संतोष गंगवार एवं श्री नरेन्द्र सिंह, उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री व हरिद्वार के सांसद श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक', ऋषिकेश के विधायक श्री प्रेम अग्रवाल सहित अनेक गणमान्य उपस्थित थे। समारोह का वातावरण पूरी तरह राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत था।

दिव्य प्रेम सेवा मिशन के संस्थापक-संचालक श्री आशीष गौतम ने आदरणीय डॉ. साहब का भावभरा स्वागत करते हुए कहा कि हरिद्वार का नाम गायत्री परिवार के नाम से ही जाना जाता है।

आदरणीय डॉ. साहब ने राष्ट्रीय ध्वज को राष्ट्र की शान बताया। दिव्य प्रेम सेवा मिशन की सेवाओं का अभिनंदन करते हुए उन्होंने कहा कि संवेदना जब उभरती है तो वह सक्रिय हुए बिना नहीं रहती। हम और आप मिलकर हरिद्वार नगरी को न केवल उत्तराखंड में, बल्कि पूरे देश में ऊँचा उठाने की कोशिश करेंगे।

भारत की स्वतंत्रता और राष्ट्रीय भावनाओं पर गौरव बोध करते हुए उन्होंने कहा कि हमारे देश में जितनी स्वतंत्रता व सद्भावना है उतनी पूरे विश्व में किसी अन्य राष्ट्र में नहीं है। देश की स्वतंत्रता की रक्षा में दिन-रात जुटे संत, सुधारक, शहीदों को उन्होंने अपनी श्रद्धांजलि दी। डॉ. साहब ने कहा कि उत्तराखंड के हर गाँव से न्यूनतम एक-एक सैनिक निकला है। हम उनके शौर्य का सम्मान करें। चीन से आये सामान का बहिष्कार करें। कुम्हार के हाथ का बना वह दिया जलायें, जिसमें देश की मिट्टी की सुगंध हो। जीवन में प्रखरता, पवित्रता, पात्रता हो तभी देश का दिया जलता रहेगा।

आर्थिक, सांस्कृतिक समृद्धि का आधार है गोमाता

देसंविवि स्थित शांतिकुंज की विशाल गौशाला में गोवर्धन पूजन का विशाल समारोह आयोजित हुआ। आदरणीय डॉ. प्रणव जी ने मुख्य पूजन किया। इस अवसर पर उन्होंने गोमाता को राष्ट्र की आर्थिक एवं सांस्कृतिक समृद्धि का आधार बताया और उसके संरक्षण, संवर्धन का अभियान चलाने का संकल्प लेने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि गोवर्धन पूजन भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अनीति के विरुद्ध किये गये संघर्ष की याद दिलाता है, गौमाता की सेवा और संवर्धन का संकल्प जगाता है। उन्होंने बताया कि देशभर में गायत्री परिवार द्वारा करीब 600 गौशाला संचालित हो रही हैं, जहाँ तरह-तरह के गौ उत्पाद तैयार किये जा रहे हैं, शोधकार्य हो रहे हैं।

इस अवसर पर उपस्थित सैकड़ों लोगों ने भगवान के सहचर एवं श्रीकृष्ण के ग्वाल-बाल की वेशभूषा में उत्सव मनाया। उन्होंने बड़े जोश, उल्लास के साथ गो-संवर्धन के नारे लगाये, नाचे, गीत गाये।

-: प्रमुख संपर्क सूत्र :-
(समय प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक)
पूछताछ : 09258369725
email : pragyaabhiyan@awgp.in
डिस्पैच विभाग : 09258360665
email : dispatch@awgp.org
समाचार संपादन : news@awgp.in

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) श्रीरामपुरम, गायत्री नगर, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा सेंचुरी ऑफसेट प्रिंटर्स, ऋषिकेश में मुद्रित। संपादक- वीरेश्वर उपाध्याय
पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411.
फोन-(01334) 260602 फैक्स-(01334) 260866

Publication date: 12.11.2016
Place: Shantikunj, Haridwar.
RNI-NO.38653/ 80
R.No.UA/DO/DDN/ 16 /2015-17
LICENCE TO POST
W.O. PREPAYMENT VIDE NO.
WPP/ 04
RENEWED 2015- 2017